कर्मफल दीपक

सन्मति प्रश्नोत्तर माला

संपादिका :
ब्र० मैनाबाई
संघ संचालिक

द्रव्यदाता :
मीठालाल महावीर कुमार सरीया
पारसोला (राज०)

प्रकाशक :
आचार्य श्री 108 आदिसागर
(अंकलीकर) ग्रंथमाला

प्रस्तावना

परमपूज्य प्रातः स्मरणीय अध्यात्मयोगी सम्राट, धर्म दिवाकर, जगद्वन्द्य, महर्षि चारित्र चक्रवर्ती, योगीन्द्रचूड़ामणि, अद्वितीय सन्त, आचार्य रत्न श्री १०८ सन्मतिसागरजी महाराज के ४७ वां जन्मोत्सव के अवसर पर विदुषी रत्न ब्र० मैनाबाई द्वारा आचार्य श्री के उपदेशों से संकलित की गई 'कर्मफल दीपक' नामक पुस्तिका में आचार्य श्री का पूजन - आरती, जीवन-परिचय एवं अतिशयकारी घटनाओं का वर्णन किया गया है तथा मनुष्य किन - किन कर्मों के द्वारा महान एवं पूजनीय बन सकता है, इस का वर्णन इस पुस्तक में बहुत ही सरल भाषा में किया गया है।

यह पुस्तक मानव कल्याण के लिये ज्यादा शिक्षाप्रद तथा उपयोगी साबित होगी। आचार्य श्री सन्मतिसागर महाराज के विशाल संघ का संचालन १४ साल से बड़ी कुशलता पूर्वक हमारी चरित्रनायिका कर रही हैं। संचालन के लिये शान्ततः, गम्भीरता विवेक, क्षमा, धीरता, उदारता, आदि गुणों की आवश्यकता होती है। ब्र० मैनाबाई उन सब गुणों से अलंकृत हैं।

आपके जीवन में उतरोत्तर यश मिले, आपका जीवन निरामय बनें। धर्म एवं समाज की सेवा के लिये दीर्घायु हों यही हमारी शुभ कामना है।

ब्र० सूरजमल जैन

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती है कि देव शास्त्र गुरु भक्त श्रीमान **श्री मोठालाल महावीरकुमार सरीया** जिनकी भक्ति आचार्य श्री सन्मतिसागरजी महाराज के प्रति व संघ के प्रति अटूट देखने में आ रही है उनकी सरलता व गम्भीरता व परिणामों के अन्दर निर्मलता है बड़ी प्रशंसनीय है। प्रतिदिन शान्ति विधान का पूजन बड़ी भक्ति के साथ किया करते है।

वह दान पूजा सेवा आदि कार्य बड़ी लगन से करते रहते हैं यह "सन्मति प्रश्नोत्तर माला" नामक पुस्तक छपवा कर अपनी चंचल लक्ष्मी का सदोपयोग किया है कोटि - कोटि धन्यवाद ! इसी प्रकार देव शास्त्र गुरु की सच्ची भक्ति द्वारा जीवन सार्थक बनावें।

—धन्यवाद !

— ब्र० मैनाबाई
आचार्य श्री १०८ सन्मतिसागरजी
मुनि संघ संचालिका

प्रकाशकीय

अहो भाग्य ! इस जीवन में यह पहला अवसर प्राप्त हुआ है कि इस पारसोला नगरी के अन्दर ऐसे चतुर्थ कालिन सन्त आचार्य शिरोमणि सन्मति सागरजी महाराज का चातुरमास हो रहा है आचार्य श्री एक त्याग तपस्या की साक्षात मूर्ति है दर्शन मात्र से आत्मा में अटूट शांति प्राप्त होती है। आचार्य श्री का ध्यान अध्ययन मौन व्रति अलौकिक है, अभी आचार्य श्री ने व्रत के १२० दिन में लगभग १० उपवास किये। वह २४ घन्टे ध्यान में रहते हैं रात्रि में सिर्फ २ घन्टे शयन करते हैं, प्रति दिन भव्य जीवों को सम्बोधन करने हेतु आपके मुखारविन्द से जो वाणी निकलती है मानो अमृत का प्याला पिला रहे हो। चन्द्रमा को लज्जित करने वालो आपका तपस्या से तपा हुआ सोने के समान जो चेहरा चमक रहा है, शरीर के अन्दर, हड्डी-हड्डी झलक रही, केवल पतली चमड़ी ऊपर रह गई है। हे गुरुवर, हे सोमतेयोगी आपकी त्याग व तपस्या का वर्णन करने में कौन समर्थ है ऐसे गुरु का आज हमें समागम प्राप्त हुआ है भाग्य की सराहना कहां तक करूं। हे गुरु ! आप अपने लिये हुए महान व्रतों की पालना सानन्द सम्पन्न हो और आप युग-युगों तक संसार के प्राणियों के मिथ्या रूपी सन्ताप को दूर करते रहें-यही हमारी वीर भगवान से कोटि-कोटि प्रार्थना है। हे गुरुवर युग–युगों तक जियो !

चरण सेवक—

मीठालाल महावीर कुमार सरीया

पारसोला (राज०)

भारत गौरव

आचार्य, उपाध्याय, योगी सम्राट, आचार्य रत्न, चारित्र चक्रवर्ती,
शिरोमणि आचार्य पद से विभूषित
श्री श्री १०८ आचार्य सन्मति सागर महाराज जी को

शत् शत् वन्दन–शत् शत् वन्दन

पारसोला चातुर्मास पर सादर भेंट

हे गुरुवर ! तेरे चरणों में हम वन्दन करने आये हैं।
सन्मति सागर मुनिवर की हम आरति करने आये हैं ।।
हे गुरुवर ! ………………

तुम काम क्रोध मद लोभ छोड़, निज आतम को पहचाना है।
घर कुटुम्ब छोड़कर निकल पडे धर लिया दिगम्बर बाना है ।।
हे गुरुवर ! ………………

छोटी सी आयु में स्वामी, विषयों से मन अकुलाना है।
सत संयमशील साधना में दृढ़ अपने मन को ठाना है ।।
हे गुरुवर ! ………………

कितनी भीषण ताप पड़ी हो, क्षुधा तृषा की बाधायें ।
स्थिर मन से सब सहते हो, विपदायें कितनी ही आयें ।।
हे गुरुवर ! ………………

नहिं व्याह किया घर–वार तजा, समता का पथ अपनाया है।
हे महाव्रती संयम धारी पूजन को "पुजारी" आया है ।।
हे गुरुवर ! ………………

विनीत—
मीठालाल महावीर कुमार सरीया, पारसोला

कर्मफल दीपक

सन्मति प्रश्नोत्तर माला

सन्मति भावना

मंगलाचरण

महामन्त्र णमोकार

ॐ जय णमो अरिहंताणं ।
ॐ जय णमो सिद्धाणं ।
ॐ जय णमो आयरियाणं ।
ॐ जय णमो उवज्झायाणं ।
ॐ जय णमो लोए सव्वसाहूणं ।

एसो पंच णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणां च सव्वेसि पढमं हवई मगलं ॥

अरहंतों को नमस्कार हो सिद्धों को नमस्कार हो आचार्यों को नमस्कार हो उपाध्यायों को नमस्कार हो सर्व साधुओं को नमस्कार हो । यह पंच नमस्कार सर्वपापों का नाश करने वाला है समस्त मंगलों में प्रथम मंगल है ।

मुनि–महात्म्य

प्रथम पक्ष

तपोनिधि मुनियों को प्रणाम करने से उच्च गोत्र मिलता है उन्हें यथाविधि दान देने से भोग, उनकी उपासना द्वारा पूजा, उनकी भक्ति करने से सुन्दर रूप तथा स्तवन करने से कीर्ति प्राप्त होती है।

द्वितीय पक्ष

जो पुरुष वाणी के द्वारा मुनियों का तिरस्कार करते हैं वे दूसरे भव में गूंगे होते हैं। जो मन से अनादर करते हैं उनकी मानसिक शक्ति नष्ट हो जाती है जो शरीर से तिरस्कार करते हैं उन्हें महान शारीरिक कष्ट भोगने पडते हैं। अतः तप रूपी धन को धारण करने वाले मुनियों का कभी भी निरादर नहीं करना चाहिए।

आत्म ज्ञान

जो आत्मा को जानता है वह सब शास्त्रों का ज्ञाता है।

विषयों से रिक्त चित वाला योगी आत्मा को जान लेता है।

आत्मा के अपने (शुद्ध) स्वभाव को ध्याओ ताकि जन्म मरण से छुटकारा मिल सके।

आत्म ज्ञानी को उपदेश की आवश्यकता नहीं।

एक महान कवि ने कहा है—

तप विद्या को करि अभिमाना, पाय लक्ष्मी सम्पति नाना।
जो नहि गुरु को मस्तक नावै, सो नर अजगर को तन पावै॥
निज मुख जो गुरु निन्दा करई, कल्प सहस्त्र नरक में परई।
गुरु की निन्दा सुने जो कोई, राक्षस स्वान जन्म तेहि होई॥

आचार्य श्री १०८ श्री आदिसागरजी
महाराज (अंकलीकर)

समाधि सम्राट आचार्य श्री १०८
श्री महावीरकितिजी महाराज

परम तपस्वी, आगमविद्, परमपूज्य

आचार्य श्री १०८ महावीर कीर्तिजी महाराज

को परम्परा में पट्टाचार्य

प० पू० चारित्र चूड़ामणि, परम तपस्वी, अध्यात्म योगी,
योगीन्द्रचूड़ामणि, चतुर्थकालीनसम, महोपवासी, भारत गौरव.

आचार्य रत्न श्री १०८ सन्मतिसागरजी महाराज

परम पूज्य आचार्यरत्न, भारत गौरव, योगीन्द्र चूड़ामणि १०८ श्री

सन्मतिसागर जी महाराज का

जीवन परिचय

आदर्श तपस्वी,

परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती योगीन्द्र चूड़ामणि महान तपोनिधि ज्योतिस्वरुप त्यागमूर्ति ज्ञानवरिधि, भविजन, पथ प्रदर्शक, अध्यात्म-योगी, चतुर्थकालिनसम, महोपवासी, भारत गौरव, आचार्य रत्न श्री १०८ सन्मतिसागर जी महाराज का नाम अन्वर्णक है। आप न्याय, व्याकरण साहित्य तथा आगम अध्यात्म मंत्र तंत्र के प्रचंड ज्ञाता हैं। आपको हिन्दी, संस्कृत तथा प्राकृत भाषाओं में विद्वता प्राप्त है। आपका प्रवचन विशेष ज्ञानामृत से, प्रत्यक्ष अनुभव की घटनाओं से भरा हुआ तथा बड़ा रोचक होता है। सभी श्रोतावृन्द तन्मय हो जाते हैं।

जन्म परिचय :-

आचार्य श्री का जन्म सं० १९९५ में एटा में फफूत ग्राम में हुआ। सागर से कटोरी भरते हुये सारे संसार ने देखा है। किन्तु आश्चर्य की बात है कि कटोरी से सागर निकलते हुए किसी ने देखा नहीं। पिताजी सेठ प्यारेलाल जी और माताजी जयमाला ने सागर रूप ओमप्रकाश को प्रदान किया। सागर तो खारा है। किन्तु इस

कटोरी से निकला सागर अपूर्व मिठास और वात्सल्ययुक्त है। सागर जल प्यास बुझा नहीं सकता किन्तु यह अनुपम सागर मीठे जल से पूरित है कि भव-भव से प्यासे जीवों की प्यास बुझाने में ही अपनी साधना लगाए हुए हैं।

आप तीन भाई और ५ बहने हैं। पद्मावती पोरवाल जाति में बड़े-बड़े आचार्य तथा विद्वान पंडित हुए हैं। शुरु से ही आप बड़े उदासी और वैरागी प्रतीत होते थे। ज्योतिषियों ने आपक लक्षण देखकर तत्काल बोल पड़े कि यह बालक महान होनहार है। यह राज योगी होगा, महा विद्वान होगा, महान पद प्राप्त करने वाला होगा, भारत वर्ष में अध्यात्म का प्रचार करने वाला होगा, उच्चकोटि का चारित्र पालन करेगा, अर्थात चतुर्थ कालसम परिचय देने वाला होगा। "पूत का पग पालने में दिखता है" ऐसी कहावत है सो ही प्रत्यक्ष में देख रहे हैं।

शिक्षा :–

आपने ६ वर्ष की आयु में ही लौकिक, धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर ली। आप हिन्दी, गणित, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, पुरुषार्थ-सिद्धयुपाय आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया। हिन्दी की उच्चतम शिक्षा बी० ए० तक प्राप्त की।

वैराग्य की ओर :–

जब आगरा में आचार्य श्री १०८ महावीरकीर्ति जी महाराज का संघ आया तब आप दर्शनार्थ आए। आचार्य श्री से अशीर्वाद और धर्मश्रद्धा प्राप्त की। हृदय से कुछ न कुछ व्रत धारण करने

की भावना प्रकट को। आचार्य श्री से प्रार्थना की कि स्वामी मुझे भी कुछ न कुछ व्रत दीजिए, जिससे मैं आत्म हित में प्रवेश करूँ। आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी महाराज ने आपके गुणों को पहचान लिया। ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने से संसार से भ्रमण को रोकने में यही समर्थ है। आपने भरी जवानी में सहर्ष सं० २०१८ में उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। हृदय में बड़ी प्रसन्नता को लिए आपने १ महीना बाद क्षुल्लक दीक्षा आचार्य श्री से ग्रहण कर ली। मगर फिर भी मन में असंतोष रहा कि कब इस परिग्रह से हटूं और भगवती जिन दीक्षा धारण करूं।

आचार्य श्री के गुरू:—

पूज्य श्री १०८ आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज से प्रार्थना की, स्वामी मुझे जिनदीक्षा दीजिए। पूज्य महाराज जी ने हंसकर बोला कुछ दिन ठहरिए। आपने कहा, स्वामी, जीवन का कोई भरोसा नहीं। बिना दिगबरी दीक्षा के मेरा एक-एक क्षण एक-एक वर्ष बराबर व्यतीत होता है। अतः मुझे शीघ्र ही निवृत्ती के पथ पर चलना है। गुरू महाराज ने वैराग्य का लक्षण देखकर दीक्षा देना निश्चित किया। श्री सम्मेद शिखर जी सिद्ध क्षेत्र में सं० २०१९ में कार्तिक शुक्ला १२ को दीक्षा श्री १०८ आचार्य विमलसागर जी महाराज के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुई और आप १०८ मुनि सन्मतिसागरजी महाराज बने, मुनि भेष प्राप्त होने से भारी संतोष हुआ मगर अध्ययन करना अति जरूरी है ऐसा आभास होने लगा। पुनः आपका

कटोरी से निकला सागर अपूर्व मिठास और वात्सल्ययुक्त है। सागर जल प्यास बुझा नहीं सकता किन्तु यह अनुपम सागर मीठे जल से पूरित है कि भव-भव से प्यासे जीवों की प्यास बुझाने में ही अपनी साधना लगाए हुए हैं।

आप तीन भाई और ५ बहने हैं। पद्मावती पोरवाल जाति में बडे-बडे आचार्य तथा विद्वान पंडित हुए हैं। शुरु से ही आप बड़े उदासी और वैरागी प्रतीत होते थे। ज्योतिषियों ने आपक लक्षण देखकर तत्काल बोल पडे कि यह बालक महान होनहार है। यह राज योगी होगा, महा विद्वान होगा, महान पद प्राप्त करने वाला होगा, भारत वर्ष में अध्यात्म का प्रचार करने वाला होगा, उच्चकोटि का चारित्र पालन करेगा, अर्थात चतुर्थ कालसम परिचय देने वाला होगा। "पूत का पग पालने में दिखता है" ऐसी कहावत है सो ही प्रत्यक्ष में देख रहे हैं।

शिक्षा :–

आपने ६ वर्ष की आयु में ही लौकिक, धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर ली। आप हिन्दी, गणित, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, पुरुषार्थ-सिद्धयुपाय आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया। हिन्दी की उच्चतम शिक्षा बी० ए० तक प्राप्त की।

वैराग्य की ओर :–

जब आगरा में आचार्य श्री १०८ महावीरकीर्ति जी महाराज का संघ आया तब आप दर्शनार्थ आए। आचार्य श्री से आशीर्वाद और धर्मश्रद्धा प्राप्त की। हृदय से कुछ न कुछ व्रत धारण करने

की भावना प्रकट की। आचार्य श्री से प्रार्थना की कि स्वामी मुझे भी कुछ न कुछ व्रत दीजिए, जिससे मैं आत्म हित में प्रवेश करूँ। आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी महाराज ने आपके गुणों को पहचान लिया। ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने से संसार से भ्रमण को रोकने में यही समर्थ है। आपने भरी जवानी में सहर्ष सं० २०१८ में उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। हृदय में बड़ी प्रसन्नता को लिए आपने १ महीना बाद क्षुल्लक दीक्षा आचार्य श्री से ग्रहण कर ली। मगर फिर भी मन में असंतोष रहा कि कब इस परिग्रह से हटूं और भगवती जिन दीक्षा धारण करूं।

आचार्य श्री के गुरु:—

पूज्य श्री १०८ आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज से प्रार्थना की, स्वामी मुझे जिनदीक्षा दीजिए। पूज्य महाराज जी ने हंसकर बोला कुछ दिन ठहरिए। आपने कहा, स्वामी, जीवन का कोई भरोसा नहीं। बिना दिगंबरी दीक्षा के मेरा एक-एक क्षण एक-एक वर्ष बराबर व्यतीत होता है। अतः मुझे शीघ्र ही निवृत्ती के पथ पर चलना है। गुरु महाराज ने वैराग्य का लक्षण देखकर दीक्षा देना निश्चित किया। श्री सम्मेद शिखर जी सिद्ध क्षेत्र में सं० २०१९ में कार्तिक शुक्ला १२ को दीक्षा श्री १०८ आचार्य विमलसागर जी महाराज के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुई और आप १०८ मुनि सन्मतिसागरजी महाराज बने, मुनि भेष प्राप्त होने से भारी संतोष हुआ मगर अध्ययन करना अति जरूरी है ऐसा आभास होने लगा। पुनः आपका

आचार्य महावीरकीर्ति जी महाराज के संघ का समागम हुआ। भक्ति से गुरुदादा को नमोस्तु किया और विचार किया कि इन्हीं के पास विद्याध्ययन करना चाहिये। महाराज उच्चकोटि के विद्वान थे। सन्मतिसागरजी महाराज ने आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज से प्रार्थना की, कि आपके पास रहकर विद्याध्ययन करना चाहता हूं। आचार्य महाराज ने कहा अपने गुरू की आज्ञा लेकर आओ इस तरह की परीक्षा लेना शुरू किया मगर सन्मतिसागरजी महाराज मैदान में डटे रहे। जो भी कहा सो ही मंजूर। साधू जीवन है सबको हंसते-हंसते सामना करेंगे, पीछे हटने वाला नहीं हूं। आचार्य श्री के चरणों में नत मस्तक हुए और रात दिन विद्याध्ययन में लगे रहे।

मेहसाना में सर्दी का मौसम था। सर्दी ने गुरुदादा पर अपना पूरा अधिकार जमा लिया। आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी महाराज को बुखार ने घेर लिया। उपचार किए गए मगर सफलता नहीं मिली। कुछ ही दिनों में उन तेजोमयी मूर्ति को आपसे छीन लिया, गुरू वियोग का भारी दुःख आपने सह लिया।

आचार्य पद की दीक्षा:—

स्व० आचार्य महावीरकीर्तिजी महाराज ने सर्व संघ समुदाय और दिगम्बर जैन समाज समुदाय के बीच दो दिन पहले ही आपको अपना आचार्य पद और संघ का भार सुपुर्द किया। आपने गुरू से विनम्र प्रार्थना की कि, गुरुदेव मैं इस पद योग्य नहीं। फिर आचार्य श्री ने पूछा तुमसे ज्यादा योग्यता किसी में

नजर आती है ? गुरू की आज्ञा पालन करना शिष्य का परम कर्तव्य है। उदयपुर महानगरी में सर्व साधू संघ के और जैन समाज के सामने संहिता सूरी पं० ब्र० सूरजमल जी के द्वारा विधि विधान के साथ आकाश में गूंजी हुई जय जयकार की ध्वनि में आचार्य पद सुपुद किया गया।

महान तपोमूर्तिः—

"साधोः कार्यं तपः श्रुते। इस सूत्र नुसार आप निरन्तर ध्यान अध्ययन में लगे रहते हैं। कठोर से कठोरतम तप की साधना आप करते हैं। मुनि अवस्था के कठोर तप साधना करने से मानव देह धारी होते हुए भी देव रूप ही मालूम होते है। आहार में अनाज, घी, तेल, मीठा, नमक, दही, जीरा, धनियां, मेथी, तिल्ली का आजीवन त्याग है। केवल पानी में उबली हुई सब्जी, केला की रोटी, राजगिरा, फल आदि आपका सात्विक आहार है। उपवास तो शुरू से ही आप ज्यादा करते है। धूप-काल में भी यहां आपने "मुक्तावली" व्रत किया। सम्मेद शिखर जी में ४ महीने चातुर्मास में केवल उबले हुए मूंग और पानी इन दो पदार्थों के अलावा कुछ भी नहीं लिया था। नागपुर चातुर्मास में भी आपने १२५ दिनों में सिर्फ २४ दिन ही आहार लिये पयु-र्षण पर्व में १५ दिन निर्जल उपवास आपने किया 'सर्वतोभद्र" व्रत करते हुए भी आप शास्त्रोपदेश करते रहे। दाहोद नगरी में आपने सिंहक्रिड़ित व्रत किये।

मंगल बहार चातुर्मास श्रृंखला:—

आचार्य पद विभूषित करने के बाद आपने आध्यात्मिक प्रचार और समाजोद्धार के लिये मंगल विहार करना शुरू किया

[१] सं० २०३० में मथुराजी [उ०प्र०]
[२] सं० २०३१ में श्री सम्मेद शिखरजी [बिहार]
[३] सं० २०३२ में रांची [बिहार]
[४] सं० २०३३ में कलकत्ता [बंगाल]
[५] सं० २०३४ में कलकत्ता "
[६] सं० २०३५ में इटावा [उ०प्र०]
[७] सं० २०३६ में भिण्ड [म०प्र०]
[८] सं० २०३७ में जबलपुर [म०प्र०]
[९] सं० २०३८ में दुर्ग [म०प्र०]
[१०] सं० २०३९ में नागपुर [महाराष्ट्र]
[११] सं० २०४० में दाहोद [गुजरात]
[१२] सं० २०४१ में डूंगरपुर [राज०]
[१३] सं० २०४२ में लोहारिया [राज०]
[१४] सं० २०४३ में पारसोला [राज०]

इस तरह आपने ग्राम, शहरों में चातुर्मास करके अपने उपदेशों द्वारा असंख्य जीवों का कल्याण और उद्धार किया।

आचार्य श्री के अतिशय:—

आप एक निर्लेप सन्त शिरोमणि हैं। आपका जहां भी मंगल पदार्पण होता है वहां की पावन भूमि तीर्थ स्वरूप बन

जाती है। जैन साधुओं के तपोबल में इतना अतिशय होता है कि उन्हें ऋद्धियां उत्पन्न होती हैं। उनकी वाणी से जो निकलता है वही सत्य होता। उनका निर्मल ज्ञान अतिशय प्रभावना का कारण बनता है। भारत वसुन्धरा का अहोभाग्य है ऐसे क्रान्तिमय समय में दिगम्बर साधु जिन्हें विशेष सिद्धियां प्राप्त हुई हैं तथा जिनके चमत्कार को देख कर सारी भारत की जनमानसकों की दृष्टि लगी हुई है ऐसे महान आचार्य श्री हमें प्राप्त हुए हैं।

नागपुर में आहार के बाद श्रीमती जैन के यहां देवकृत पदचिन्ह स्थापित हो गये। कलकत्ता में पद्मावती देवी आरती करना, बनारस व अयोध्या के बीच डाकुओं का व्रत ग्रहण करना। खनियाधाना में मेले में पानी को कमी पर कुआं का अपने आप भर जाना, सम्मेद शिखर चातुर्मास में १२५ रोज में सीर्फ चौबीस रोज आहार, वह भी सिर्फ पानी तथा उबले हुए मूंग तथा ऐसी हालत में १००८ श्री सम्मेद शिखरजी की वन्दना करना।

इटावा चातुर्मास के अवसर पर आचार्य श्री ने एक दिन छोड़कर आहार ग्रहण करने का नियम लिया था। कड़ी धूप में बैठकर २ घन्टे तक ध्यान लगाना एवं जल का त्याग २ माह का कर दिया था। आप महान तपधारी साधू है। इसी प्रकार भिण्ड में एक के घर में चोरी हुई आचार्य श्री ने कहा माल वापिस मिलेगा मगर एक भाग दान में दोगे। चोरी मिल जाने के बाद दान देने के लिये उसका मन नहीं हुआ तो उसके घर में ८ दिन में दुबारा चोरी हो

गई। साधुओं के शब्दों का पालन करना ही यथार्थ होता है। दुर्ग में भी चातुर्मास में पद्रह निर्णान्ति उपवास तथा धूपकाल में मुक्तावली व्रत, रांची में एक माह पानी नहीं लिया। यही हाल बावनगजा में भी हुआ, दाहोद में १६० दिन में १२० उपवास का क्रम रहा। दाहोद नगरी में ही आसोज सुदी १२ तारीख १६-६-८२ को श्री शाह हर सोलावाड में सिंह क्रिड़ित उपवास के पामणे में देवोपुनीत चमत्कार आचार्य श्री के चरण पत्थर फर्श पर अंकित हो गये।

मंगल कामना:—

ऐसे स्वपर हितकारी, करूणासागर, वात्सल्य हृदयी, कठोर तपस्वी, चारित्र चक्रवर्ती महान योगी, योगोन्द्र चूड़ामणि आचार्य श्री धर्म प्रभावना के लिये दीर्घायु हो यही शुभ कामना है।

मेरी आन्तरिक अभिलाषा है कि आप जैसे महान तपस्वी गुरूवर रूपी कल्पवृक्ष की छाया में ही अपने लिये व्रतों को प्रतिपालना आपके चरणों में करती रहूं, अन्त में आर्यिका बनकर समाधि मरण करूं यही सर्व कल्याण केन्द्र महावीर पुत्र से अन्तिम प्राथना है कि मेरे गुरू जयवन्त हो।

पल–पल में मंगल कामना चहाने वाली,

ब्र० मैना जैन आचार्य श्री सन्मितसागरजी संघस्थय।

सही एवं मति से अपने हृदय का उद्गार, जगत पूज्य।
शत–शत वन्दन है सौम्य मूर्ति शत–शत वन्दन॥

आचार्य श्री का पूजन

हो आप सन्मति सिन्धु मुनिवर परम तप अवतार हो।
गम्भीर ध्यानी शान्तमुद्रा शिरोमणि भरतार हो॥

आव्हान करता पूज्य गुरुवर हुत कमल पर आइए ।
पूजहूं मन बचन तन से पाप मन नस जाइए ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य सन्मतिसागर मुने अत्रावतरा "वतर संवौष्ट आव्हानं ।

ॐ ह्रीं श्री "अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम ।

ॐ ह्रीं श्री अत्र मम सन्निहितो भव वषट ।।

अथाष्टकम्

गंगा नद्दी शुभवार ले भृंगार भरा ।
गुरु चरणों में दे धार नाशे जन्म जरा ।।
श्री सन्मति सिन्धु मुनीश तुम पद पूज करूं ।
काटो भववेड़ो गुणीश याते पग पकरूं ।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री सन्मतिसागर मुनीन्द्रायः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्विपामीति स्वाहा ।

ले उत्तम चन्दलाय केशर संघ घिसूं ।
गुरू चरण चढ़ाऊं आय भव-भव रोग नसूं ।।
श्री सन्मति सिन्धु.....

ॐ ह्रीं आचार्य सन्मतिसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्विपामीति स्वाहा ।

ले अक्षत धवल अनूप सुन्दर अणियारे ।
धर पद पंकज में खूब अक्षय निधि धारे ।।
श्री सन्मति सिन्धु.....

ओ ह्रीं श्री सन्मति सागर अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्

निर्वपामीति स्वाहा ।

जुहि वेला कमल मंगाय पुष्प सुजाती घने ।
गुरू चरणों में सु चढ़ाय काम व्यथा जुहने ॥
श्री सन्मति सिन्धु.....

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिसागर कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवर बावर शुभ भांत व्यंजन लाय धरे ।
भर कंचन थाल चढ़ात रोग क्षुधादि हरे ॥
श्री सन्मति सिन्धु.....

श्री ह्रीं श्री सन्मतिसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

ले गौघृत सुन्दर जोत करू कपूर लिया ।
गुरु आरती करूं समशेत आत्मप्रकाश किया ॥
श्री सन्मति सिन्धु .....

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिसागर मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ले नाना विधि शुभ धूप होय सुगन्ध अति ।
डारो वैश्वानार खूब नाशे कर्म गति ॥
श्री सन्मति सिन्धु.....

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिसागर अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ आम्र काम्र फल सार श्र फल अति प्यारे ।
धर कंचन थाल मझार जोड़ू पद थारे ॥

श्री सन्मति सिन्धु .....

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिसागर मोक्ष प्राप्ते फलं निर्विपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य सुसुन्दर सार हाटक थाल भरा।
पद जोड़ू भक्ति अपार भव भ्रम तुरत हरा॥
श्री सन्मति सिन्धु .....

ॐ ह्रीं श्री सन्मति सागर अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा।

सन्मति सिन्धु आचार्य पद नमन करूं त्रय वार।
करूं सु गुण गुण मालिका जो है जन मन हार॥

जयमाला

जय जय श्री सन्मति सिन्धुराज गुण गावे सब जन नाथ आज।
जिला एटा में इक नगर जान है नाम फफूता सुद्ध वान ॥१॥
वहां रहते प्यारेलाल सेठ, जयमाला पत्नी अधिक श्रेष्ठ।
है पदमावति पुरवार जाति, जो अति विशुद्ध है चमचमाति ॥२॥
उन्नीसी पंचान्नु मझार, शुभ माघ सिता अष्टमी सुवार।
जयमाला कुक्षी जन्म होय, उस घर में था आनन्द सोय ॥३॥
सुत मुस्कान से मोद देय, सब देखे बालक हर्ष लेय।
उन माति पिता तब रखा नाम, हो ओमप्रकाश सु सुखद धान ॥४॥
बढ़ते दुतिया इन्दु समान, सब जन को करते हर्ष मान्।
जब आया यौवन काल आप, नश दिया सुभट कुकाम चाप ॥५॥
हो बाल ब्रह्म गुरू देव आप, वैराग्य बढ़ा मन नस कु पाप।
गुरू दर्शन कीने विमल सिन्धु, ली सप्तम प्रतिमा सुख निकन्दु ॥६॥
है दो हजार सतरा सु साल, श्रावण सित अष्टमी सुखद चाल।
क्षुल्लक दीक्षा दी विमल सिन्धु, तब नाम रखा है नेमि सिन्धु ॥७॥

फिर वह कर विहार गुरू संघ आप, उपदेश देय जन धोय पाप ।
जब आये शिखर सम्मेद जान, तुम दर्शन कीने नग महान ॥८॥
वहां विमल सिन्धु से कहत आप, दो दीक्षा दैगम्बरी सु आप ।
कार्तिक शुक्ला द्वादशी सुजान, ली दीक्षा दैगम्बरी महान ॥९॥
तब विमल सिन्धु सूरि सुदेख, धर सन्मति सिन्धु नाम एक ।
जय भारत पद से कर विहार, उपदेश दिये भविजन सुधार ॥१०॥
महावीर कीर्ति गुरू–गुरू सुदेव, उन दर्शन कीने को सुसेव ।
महशाना में ली गुरू समाधि, उन सूरपद तुमको प्रसादि ॥११॥
द्वय सहसा अट्ठाविस मझार, फाल्गुन शुक्ला द्वितीया विचार ।
है नगर उदयपुर में सुजान, विधिवत कीना तुम पद प्रदान ॥१२॥
है सौम्य मूर्ति तुम गुरू दयाल, षट जीवन के ही रक्षपाल ।
दशधर्मादिक सेवत प्रवीणा, जय द्वादश तप में हो विलीन ॥१३॥
षट आवश्यक हो नित करन्त, अरु पंचाचार में हो निरन्त ।
मन वचन तन गुप्ति वशमें कीन अत बोले हितमित प्रिय सुचीना॥१४॥
हो परम तपस्वी गुण निधान, विद्वान परम धारत सुध्यान ।
नहीं राग द्वेष मन में विचार, सब जीवों में मैत्री अपार ॥१५॥
संसार सिन्धु गहरा अपार, उसमें डूबत हूं नहीं विचार ।
'सूरजमल' करता नमस्कार, गुरूवर करो भव सिन्धु पार ॥१६॥

छत्ता छन्द

जय जय सन्मतिजी दो सन्मतिजी तारण तरण जहाजा हो ।
पद पंकज नावे कीरति गावे अमल गुणों के भाता हो ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिसागर अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्विपा-
मीति स्वाहा ।

सन्मति सिन्धु आचार्य की पूजन करे जो कोय ।
सुख सम्पति पावे सही अन्तिम में शिव होय ॥

इत्याशिर्वाद पुष्पांजलिक्षिपेत ।

रचियता—ब्र० मैना

वन्दना

तर्ज- यशोमति मैया से बोले

रचियता- 'प्यासा' जैन

सन्मति सिन्धु को वन्दन हमारा आये,
शरणे दे दो सहारा- आये हैं शरण ।
बोले दुःख पाती वाणी सुनो श्रीगुरुवर,
कोई न संग साथी अहो श्रीगुरुवर ॥

कर्मों ने डाला घेरा हो हो हो कर्मों ने डाला घेरा,
घातिया में फेरा सुदेना किनारा सन्मति ।
बीच भंवर में अटको नैया मेरो गुरुवर,
तुम बिन कौन तारे श्री गुरुवर ॥

पार लगा दो नैया हो हो हो पार लगादो,
नैया बन के खिवैया कोई न सहारा सन्मति ।
परम हितैषी सब के पर उपकारी,
तेरी कृपा से सुधरी बिगड़ी हमारी ॥

'प्यासा' को तारो गुरुवर हो हो हो प्यासा को,
तारो गुरुवर नजरे पसारो अब तो उबारो ।
सन्मति सिन्धु को वन्दन हमारा आये हैं शरणे दे दो सहारा,
आये हैं शरण दे दो सहारा अति ।

□

तर्ज– मैं तो आरती उतारूं रे ।

मैं तो आरती उतारूं रे सन्मति सिन्धु की,
जय जय महामुनि जय जय हो जय ।
बहे समता की हर पल धार इनके नैनों में,
अरी मित्र है एक समान इनके नयनों में ।।
नहीं छोटे बडे का सवाल इनके नयनों में,
सब जीव हैं एक समान इनके नयनों में ।
नाचुं गाऊं झुमझुम मगन होके घूम घूम गुण गान ।
गाऊं रे हो प्यारा - प्यारा गुण गान गाऊं रे ?
है प्यारेलालजी तात माता जयमाला,
शुभ ग्राम फपूतू माठा चमका यह तारा ।
लगा उन्नीसवां साल मुनि पद है धारा,
करे तप और त्याग अपार पाये न पारा ।।
ले के दीप और धूप मन मुदित हो के खूब नाचूं,
मैं गाऊं रे हो प्यारा प्यारा गुणगान गाऊं रे ।
कोई आया है पुण्य अपार दर्शन है पाया,
मेरा नश्वर यह जीवन आज सार्थक बन पाया

अब करूं मैं एक पुकार अर्जी यह लाया,
इन चरणों में दो स्थान मन में यह भाया।
"प्यासा" कर जोड जोड यह शब्दों की यह माला,
रोज दीपक जलाऊं रे हो प्यारा दीपक जलाऊं रे।
मैं तो आरती उतारुं रे सन्मति सिन्धु की जय जय ।।

□

तर्ज- दिल लूटने वाले जादूगर.... ।

रचयिता- "प्यासा"

आचार्य श्री के जन्मोत्सव की मंगल कामना !

आरती

दिल हरष हरष कर झूम रहा शुभ कैसा अवसर आया है।
श्री सन्मति सागर मुनिवर का जन्मोत्सव आज मनाया है।।

है प्यारेलालजी पिता श्री जयमाला देवी माता है।
जिस ग्राम में आपने जन्म लिया फपूतू वो कहलाता है।।
है ओम प्रकाशजी जन्म नाम तुझ पाके मन हर्षाया है।
दिल हरष हरष............. ।

बचपन बीता जब यौवन का वो वर्ष उन्नीसवा आया है।
लख के झूठे जग के वैभव गुरुवर का मन अकुलाया है।
श्री बिमलसिन्धुजी मुनिवर से तब जोग मुनि का धारा है।
दिल हरष हरष........... ।

है त्याग तपस्या बेमिसाल, जिनकी नहीं कोई सानी है।
देव तपस्या उनकी पड़ती, दांतों से अंगुली दबानी है।

घृत नमक तैल मीठा अनाज, जीवन भर त्याग बनाया है।
दिल हरष हरष..... ।
कोई भक्ति से शीश नवाता है, या लाखकरे कोई निन्दा।
सब पर तेरी सम दृष्टि है, है किसी से नहीं सिखवा।
पापी से पापी तर जाय, जो शरण आपकी आया है।
दिल हरष हरष..... ।
तुम विश्व धर्म के सूरज हो, तप त्याग की अद्भुत मरत हो।
है धन्य धन्य महिमा तेरी, तम हरने वाले सूरज हो।
क्या वर्या करे इस तपस्या की, नहीं पार किसी ने पाया है।
दिल हरष हरष..... ।
४७ वां यह जन्म दिवस, ऐसे सद्गुरु का आया है।
जन जन में खुशियां व्याप रहीं, हर मन में मोद समाया है।
४७ दीपक ले झुम - झुम, 'प्यासा' चरणों में आया है।
दिल हरष हरष..... ।

—ब्र० मैनाबाई जैन
आचार्य सन्मतिसागरजी मुनिसंघ
संचालिका

कर्मफल दीपक

सन्मति प्रश्नोत्तर माला

१—संसारी जीव किस कारण से शोक को प्राप्त होता है ?

जो जीव शोक से संतप्त मनुष्य को देखकर अथवा किसी द्वेष बुद्धि से अन्य जीवों को दुख देकर अथवा अपने हृदय में किसी के साथ शत्रुता कर संतुष्ट होता है वह शोक को प्राप्त होता है।

२—संसारी जीव निर्धनता को कैसे प्राप्त होता है ?

जो मनुष्य सत्पात्रों के लिए अपना द्रव्य खर्च नहीं करता है। अथवा शक्ति से दूसरों के द्रव्य को हरण करता है। या जो कृपणों को देखकर संतोष करता है वे दूसरे भव में धनहीन होते हैं।

३—मनुष्य अनादर क्यों पाता है ?

जो पूर्व जन्म में देव गुरु शास्त्र का अनादर करके संतोष करता है। वह जगह-जगह अपमानित होता हुआ दूसरे जन्म में अपयश प्राप्त करता है।

४—दुष्ट स्त्री किस कारण से मिलती है ?

जो अपनी स्त्री से सदा कलह करता रहता है अथवा किसी द्वेष से सदाचारी स्त्रियों की निंदा सदा करता है या कलहकारिणी स्त्रियों को देखकर संतोष करता है वह अगले जन्म में दुष्ट स्त्री प्राप्त करता है।

५—दुष्ट पति क्यों मिलता है ?

जो अपने पति से सदा कलह करती है अथवा दुष्ट मनुष्यों को देखकर प्रसन्न होती है या सदाचारी विनयवान पति से द्वेष करती है वह अगले जन्म में दुष्ट पति पाती है।

६—मल मूत्रादि निंद्य पदर्थों में क्यों जन्म होता है ?

जो दुर्गन्ध मलिन अन्नपान को खाते हैं अथवा मांसादि का सेवन करते हैं या सदा मद्यपान करते हैं वे पशुओं के मल आदि में जन्म लेते हैं।

७—घर कुटुम्ब का त्याग क्यों नहीं करता है ?

जो पूर्व जन्म में इन्द्रिय विषयों में लीन रहा था अथवा कुदेव कुशास्त्र कुगुरु की भक्ति करता था वह गृहादि का त्याग नहीं कर सकता।

८—अन्धे किस कारण से होते है ?

जो अपनी शक्ति से दूसरों के नेत्रों को फोड़ देता है, जो अन्य की सुन्दर स्त्रियों का हरण करता है, धनादिक का हरण करता है, अभिमान से अंधों का अनादर करता है वह अगले जन्म में अंधा होता है।

९—किस कारण से लूले लगडे अपांग होते हैं ?

जो किसी स्वार्थ से मनुष्य अथवा पशु के हाथ पैर काटता है या लूले लगडे अपांग जीवों को देखकर प्रसन्न होता है वह अगले जन्म में लूला लगड़ा अपांग होता है ?

१०—व्याध किस कारण से होता है ?

जो मांस खाता है मद्यपान करता है जीवों का घात करता

है धर्म द्वेषी है जगह जगह लड़ाई झगड़े कलह सदा करता है वह परलोक में धर्महीन पशुओं को मारने वाला व्याध होता है।

११—कुपुत्री की प्राप्ति किस कारण से होती है ?

जो अपने किसी भाई का अनादर के लिए अन्य सुन्दर कन्या को दिखाकर अपनी निंद्य कुपुत्री का विवाह करता है उसको अगले जन्म में कुपुत्री की प्राप्ति होती है।

१२—वंचक कैसे होता है ?

जो मन में अन्य विचार करता है वचन से अन्य बोलता है काय से अन्य कार्य करता है इस प्रकार से वह मरकर ठग होता है।

१३—यह मनुष्य बहरा कैसे होता है ?

जो पूर्व भव में कुकथायें सुनकर संतुष्ट होता है बहरे मनुष्यों का अनादर कर हर्ष करता है वचन सुनकर भी नहीं सुनने के समान बनता है ऐसा जीव अगले जन्म में बहरा होता है ?

१४—यह मनुष्य गूंगा क्यों होता है ?

जो अपनी जिव्हा की लोलुपता से मांस आदि अभक्ष वस्तुओं को खाता है निर्ग्रंथ मुनियों की निन्दा करता है वह परभव में गूंगा होता है।

१५—धूर्त किस कारण से होता है ?

जो मिथ्या लोभी है व्यसनों में आसक्त है नास्तिक वादी है पुनरजन्म को मानता नहीं है। वह परलोक में धूर्त होता है।

१६—रोगी कैसे होता है ?

जो कभी भी औषधिदान नहीं देता है रोगी को कभी भी

सेवा नहीं करता है तथा अभिमान से रोगी को निंदा करता है वह अगले जन्म में रोगी होता है।

१७—दुःख दायक कुटुम्ब कैसे मिलता है ?

जो दूसरों में कलह कराकर संतुष्ट होता है या अयोग्य दुष्ट वचनों को बोलकर संतुष्ट होता है या अन्य का कलंकित कर प्रसन्न होता है उसको परलोक में दुःखदायक कुटुम्ब मिलता है।

१८—दुष्ट स्वभाव कैसा होता है ?

जो नरक से आया हो दुष्ट बुद्धि को ग्रहण करने वाला हो मनुष्य आयु का बंधकर कुमार्गगामी हो गया हो दुष्ट संगति वाला हो वह मरकर दुष्ट स्वभावी होता है।

१९—मनुष्य भयभीत कैसे होता है ?

जो भय से राजा का अथवा भूत पिशाचों का धन हरण करता है या किसी को घर से निकाल देता है या निकालकर मार देता है वह मरकर भयभीत स्वभाव वाला होता है।

२०—निर्बल होने का क्या कारण है ?

जो निर्दोषी के वस्त्र अन्नपान का हरण करता है अथवा निर्दोषियों को मारकर प्रसन्न होता है छोटे-छोटे जीवों को बांधकर पकड़ कर मारकर प्रसन्न होता है वह परभव में दुष्ट और अशक्त होता है।

२१—कृपण होने का क्या कारण है ?

जो दान में विघ्न करता है धर्म में दान करने से रोकता है धनोपार्जन अत्यासक्त है वह परलोक में कृपण होता है।

२२— मूर्ख किस कारण से होता है ?

जो जिनवाणी की निंदा करता है जिनवाणी के जानने वालों की निंदा करता है जिनवाणी के पढने में मन नहीं लगाता है मूर्ख श्रेष्ठ निर्ग्रंथ गुरुओं का अनादर करता है वह अगले जन्म में मूर्ख होता है।

२३— पराधीन होने का कारण क्या है ?

जो निरोग होने पर भी दीन है निर्दोषी मनुष्यों को बलात पकड़कर जेल में डालते हैं और उनका अन्न पानी रोककर प्रसन्न होते हैं वह अगले जन्म में पराधीन होते है।

२४— योग्य पदार्थ को प्राप्त करके भी क्यों नहीं भोगता है ?

जो द्वेष पूर्वक शयन आसन आदि सामग्री में अंतराय करते हैं या भोजन आदि सामग्री में अन्तराय करते हैं भूखे लोगों का अपमान करते है वह प्राप्त सामग्री का उपयोग परलोक में नहीं कर सकते हैं।

२५— कुरूप किस कारण से होते हैं ?

जो कुरूप वाले का अनादर करते हैं किसी अन्य के सुन्दर शरीर को मल आदि से बिगाड़ते हैं सुन्दरता नष्ट करने के लिए अयोग्य प्रयत्न करते हैं वह परलोक में कुरूप होते हैं।

२६— सुन्दर पदार्थ होने पर भी उपयोग क्यों नहीं कर पाते हैं ?

जो सुंदर स्त्री या अन्य पदार्थ देखकर प्रसन्न नहीं होते हैं उनको भोगने की इच्छा करते हैं वह परभव में सुन्दर स्त्री अथवा गृहादि पदार्थों का सेवन नहीं कर सकते हैं।

२७— क्रोधी कैसे होते हैं ?

जो पूर्व जन्म में अत्यन्त क्रोध करते हैं क्रोधी या लड़ते हुए लोगों को देखकर प्रसन्न होते हैं वह अन्य जन्म में क्रोधी होते हैं।

२८—निंदनीय किस कारण से होते हैं ?

जो बलात तप में अतीचार लगाते हैं या अपने यश के लिए अपना धन खर्च करते हैं या पाखंडी साधुओं की प्रशंसा करते हैं वह परलोक में निंदनीय होता है।

२९—सत्कार पुरस्कार क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

जो विद्याभिमान से साधुओं को नमस्कार नहीं करते हैं स्तुति नहीं करते हैं विनय नहीं करते हैं सेवा नहीं करते हैं सदा धर्म विरुद्ध कार्य करते हैं वह याचक बनकर भी सत्कार पुरस्कार को प्राप्त नहीं होते हैं।

३०—शस्त्रादि के घात से मरने का क्या कारण है ?

जो जीव हिंसा की प्रशंसा करते हैं उसकी अनुमति देते हैं उसके उपाय बताते हैं विभिन्न कुचारित्र धारण करते हैं वह अन्य शस्त्रों से परलोक में मरते हैं।

३१—चोर क्यों होता है ?

जो चोरों की प्रशंसा करता है उसकी अनुमति देता है चोरी के साधन बताता है दूसरों के रत्न धन राज्यादि की इच्छा करता है वह परलोक में चोरी करने वाला होता है।

३२—किस कारण से क्रियाहीन होता है ?

जो क्रियाहीन जीवों की प्रशंसा करता है क्रियाओं का आचरण

करने वालों की निंदा किया करता है अविचार पूर्वक शास्त्र विरुद्ध आचरण करता है वह परभव में क्रियाहीन होता है।

३३—पुत्र वियोग का कारण क्या है ?

जो माता पिता के स्नेह पूर्वक क्रिया को देखकर क्रोध करता है धर्मात्माओं के अनुराग को देखकर क्रोध करता है ईर्ष्या द्वेष को देखकर संतुष्ट होता है वह पुत्र के वियोग को प्राप्त होता है।

३४—भाई-भाई के विरोध का क्या कारण है।

जो भाई भाई में या पशु पक्षियों में कलह विषाद पैदा करके संतुष्ट होता है अपने भाई बंधुओं का अनादर करते हैं। वह अगले जन्म में भाई बन्धुओं से विरोध को प्राप्त होते हैं।

३५—माता पुत्र का विरोध क्यों होता है।

जो पुरुष माता पुत्र का विरोध कराते हैं माता के अनादर से प्रसन्न होते हैं विद्वान पुत्र के अनादर से संतुष्ट होते हैं उसे अगले जन्म में पुत्र माता का विरोध मिलता है।

३६—गर्भ में आये हुए भाग्य हीन पुत्र के लक्षण क्या हैं ?

भाग्य हीन पुत्र के गर्भ में आते ही माता पर आपत्तियां आ जायें, पिता की बुद्धि विरुद्ध हो जायें, माता पिता अभक्ष खाने लग जाय, अथवा निकृष्ट कार्यों में उन दोनों की बुद्धि लग जाय तो गर्भस्थ पुत्र भाग्य हीन है।

३७—पिता पुत्र के विरोध का कारण क्या है ?

जो पिता पुत्र में कलह कराता है उस प्रकार की कलह से प्रसन्न होते हैं गुरुओं की विनय नहीं करते हैं वह परलोक में पिता

पुत्र के विरोध को प्राप्त होता है।

३८—लंगड़ा होने का क्या कारण है ?

जो अस्त्र शस्त्र से अन्य के हाथ पैर काटता है कान नाक काटता है आंख फोड़ता है अभिमान से अपांग लूले लगड़े आदि का अनादर करता है वह लंगड़ा परलोक में होता है।

३९—नरक क्यों जाते हैं ?

जो अति क्रोधी है प्राण घाती है देव धर्म गुरु का विरोध सदा करता है अपने भाई बंधुओं से बैर विरोध करता है वह नरक जाता है।

४०—वामन शरीर किस कारण से मिलता है ?

जो अभिमान से वामन शरीर धारी की निंदा करता है अनादर करता है घात करता है दुखी करने की इच्छा करता है वह परलोक में वामन शरीर का धारक होता है।

४१—पशु पर्याय कैसे मिलती है।

जो कुचारित्र वालों की प्रशसा करता है, अभक्ष खाता है, देव धर्म गुरु की निन्दा करता है, पशुओं पर अधिक भार लादता है अथवा जीवों का अन्न पान बन्द करता है वह परलोक पशु पर्याय प्राप्त करता है।

४२—कुभोग भूमि में क्यों जन्म लेता है ?

जो मिथ्यादृष्टि साधुओं को अन्न पान औषधि आदि का दान देता है सम्यकदृष्टि साधुओं का अनादर करता है वह परलोक में कुभोग भूमि में पैदा होता है।

४३—कुग्राम वासी होने का क्या कारण है ?

जो दूसरों को मिथ्या कलंक लगाकर बल पूर्वक गांव से निकालता है जंगल में भेजता है निम्न क्षेत्रीय मनुष्यों की प्रशंसा करता है वह परलोक में छोटे गांव में रहने वाला कुग्रामवासी होता है ।

४४—व्यवहार शून्य क्यों होता है ?

जो व्यवहार कुशल लोगों को देखकर क्रोध करता है झूठा अभिमान करके सन्तुष्ट होता है अज्ञानता से ज्ञानी मनुष्यों की निंदा करता है वह परलोक में व्यवहार शून्य होता है ।

४५—अधिक अन्न खाने वाला क्यों होता है ?

जो पशु पक्षियों के लिए दिये अन्न को बलपूर्वक स्वयं खाता है हमेशा खाने पीने में समय व्यतीत करता है दान देने के परिणाम कभी नहीं होते हैं वह परलोक में बहुत अन्न खाने वाला होता है ।

४६—निर्धन किस कारण से होता है ?

जो दूसरे के धन को चुराकर प्रसन्न होता है अन्य के धन रत्न राज्य आदि को हरण करने वाले को देखकर प्रसन्न होता है धनहीन लोगों का अनादर कर सन्तोष करता है वह परलोक में निर्धन दरिद्री होता है ।

४७—कुकाव्य करने वाला कैसे होता है ?

जो कुत्सित काव्य शास्त्र में रुचि करता है सारहीन दंत कथाओं को सुनकर संतोष करता है कुत्सित काव्य शास्त्रों का

दान देकर संतोष करता है वह कुत्सित काव्य करने वाला होता।
४८—अधिक भारवाही कैसे होता है ?

जो पशुओं पर अधिक भार लादकर संतोष करता है कपट से पशु या मनुष्य से अधिक काम लेकर या शक्ति से अधिक कार्य कराकर संतोष करता है पशुओं को ताड़ना कर संतोष करता है वह अगले जन्म में अधिक भार ढोने वाला है।

४९—दीर्घायु पाकर दुखी क्यों होता है ?

जो बिना प्रयोजन के वृक्षों को काटता है छोटे-छोटे पौधों को काटता है बिना प्रयोजन के पृथ्वी खोदता है बिना कारण त्रस स्थावर जीवों को दुख देता है वह परलोक में दीर्घायु पाकर भी दुख को प्राप्त करता है।

५०—नपुन्सक होने का कारण क्या है ?

जो अनंग क्रीड़ा करता है नित्य हिंसा का प्रेमी है नपुन्सकों की निन्दा करता है अत्यन्त कामी होता है कुशील सेवन के लिए प्रयत्न करता रहता है वह परलोक में नपुन्सक होता है।

५१—विकलत्रय में जन्म क्यों होता है ?

जो निर्दय पूर्वक विकलत्रय जीवों को दुख देता है उनको ताड़ना देता है उनको इकट्ठा कर बन्द करता है वह परलोक में विकल त्रय जीवों में जन्म लेता है।

५२—दास होने का क्या कारण है ?

जो दीन दुखी लोगों से कार्य कराकर धन देता है लोभ से कभी भी उनको धैर्य नहीं बंधाता है वह परलोक में दूसरों को

दासता को प्राप्त होता है।

५३—स्त्री पर्याय क्यों प्राप्त होती है ?

जो स्त्री का वेष धारण करने वाले मनुष्यों को देखकर संतोष करता है हमेशा स्त्रियों की इच्छा करता है स्त्रियों के समान हँसता है चलता बोलता है वह परलोक में स्त्री पर्याय को प्राप्त करता है।

५४- स्थावर शरीर क्यों मिलता है ?

जो भगवान अरहंत की निन्दा करता है अहिंसा धर्म की निन्दा करता है वीतरागी निर्ग्रंथ गुरु की निन्दा करता है कुदेव कुधर्म कुगुरु की प्रशसा करता है सदाचरण की सदा निन्दा करता है वह स्थावर शरीर धारी होता है।

५५- अंग हीन क्यों होता है ?

जो दूसरे के आंगो पांगों को काटता है दूसरों का घर नष्ट करता है हीनांगोपांग लोगों को देखकर संतोष करता है वह पर लोक में अंगहीन होता है।

५६- नीच कुलोत्पन्न क्यों उत्पन्न होता है ?

जो अपने मुख से अपनी ही प्रशंसा करता है अन्य की निंदा करता है अभिमान से अज्ञान से गुणी श्रेष्ठ कुल की निन्दा करता है वह परलोक में नीच कुल में जन्म लेते हैं।

५७- उच्च कुलोत्पन्न धन हीन कैसे होते हैं ?

जो प्रथम उच्च गौत्र का बंध करते हैं पश्चात अभिमान से दूसरों की निन्दा करते हैं अभिमान से गुरुओं का सदा तिरस्कार

करते हैं वह अगले जन्म में उच्च कुल में पैदा होकर भी दरिद्री होते हैं।

५८- जीविका के लिए परिभ्रमण क्यों करते हैं ?

जो अपने सेवकों को बार बार यत्र तत्र दौड़ाकर गृह कार्य कराता है और आश्वासन देकर भी पैसा नहीं देता हैं वह परभव में आजीविका के लिए हमेशा भ्रमण करते हैं।

५९- कपट से आजीविका क्यों करते हैं ?

जो छल पूर्वक वीतराग निर्ग्रंथ गुरुओं को आहार दान देते हैं कपट से देव शास्त्र गुरु की सेवा करते हैं वंचको की प्रशसा करते हैं वह परलोक में कपट पूर्वक आजीविका प्राप्त करते हैं।

६०- पशु होकर घर - घर क्यों बिकता हैं ?

जो कपट पूर्वक दूसरे की स्त्री अथवा पुत्री को मूल्य से खरीदता है अथवा पशु व गाय को छल पूर्वक खरीदता है सोने बैठने का सामान या अन्न वस्त्र को ग्रहण करता है मायाचारो मनुष्यों प्रशंसा करता है वह पशु पयार्य प्राप्त कर घर घर में बिकता है।

६१- अनेक जीवों की एक साथ मृत्यु क्यों होती है ?

जो बहुत लोग मिलकर वीतराग निर्ग्रंथ गुरु की निन्दा करते हैं मिलकर कुसित कार्य करते हैं अज्ञानता से मिलकर पशुओं की लडाई देखकर प्रसन्न होते हैं वह मिलकर एक साथ मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

६२- स्त्री पुरुष के हृदय में परस्पर में काम वासना क्यों होती है ?

जो पूर्व भव में स्त्री पुरुष परस्पर व्यभीचार कुशील सेवन

करते हैं मोह से या राग रूप परिणाम से हंसते रहते हैं अथवा स्त्री पुरुष का सम्बन्ध रहता है वह अगले भव में परस्पर कामित होते हैं।

६३— अन्य को देखकर मन में क्रोध क्यों पैदा होता है ?

जो अपना शत्रु था या शरीर को नष्ट करने वाला था विरोधी था कुटुम्बी का वियोग करने वाला था वह परलोक में ऐसे लोगों को देखकर क्रोध उत्पन्न होता है।

६४—एक समय में एक साथ अनेक जीव रोगी क्यों होते हैं ?

जो मिलकर मुनियों का पसीना और धूली से उत्पन्न मलिनता देखकर जुगुप्सा करते हैं उनकी निन्दा करते हैं उनका तिरस्कार करते हैं वे सब एक साथ अगले जन्म में रोगी होते हैं।

६५ रोग शांत करते हुए भी शांत क्यों नहीं होता है ?

जो वैद्य होकर भी रोगियों की सेवा से वंचित रहता है लोभ से रोग का भय दिखाकर अधिक धन लेता है और औषध पूर्ण नहीं देता है वह रोगी होने पर प्रयत्न करता हुआ भी रोग को शांति करने में सफल नहीं हो पाता है।

६६—गर्भपात क्यों होता है ?

जो गर्भ में अपने या दूसरे के बच्चे को मार देती है पुत्र को मारने के लिए विष दिया है गर्भपात से संतोषित हुई है वह गर्भपात को अगले जन्म में प्राप्त होती है।

६७—कुव्यसनों में धन क्यों खर्च होता है ?

जो बलपूर्वक अपने द्रव्य को खर्चता है कुव्यसनियों की

प्रशंसा करता है बलपूर्वक दूसरों की स्त्रियों को हरण करता है प्रसन्न होता है संतोषित होता है वह अगले जन्म में धनादिक की शक्ति का व्यय कुव्सनों में करते हैं।

६८—सम्यक ज्ञान में रूचि क्यों नहीं होती है?

जो कुशिक्षा देकर दिलाकर संतोषित होता है मनुष्यों को कुव्यसनों में लगाकर प्रसन्न होता है देवशास्त्र गुरु की निन्दाकर प्रसन्न होता है दुष्ट नीच लोगों के बचनों को सुनकर प्रसन्न होता वह परलोक में सम्यग्ज्ञान में रुचि नहीं करने वाला होता है।

६९—चांडाल से क्यों मरते हैं?

जो अनेक जीवों की हिंसाकारी कार्य करते हैं पशुओं के प्राण घात करते हैं मांस मद्य मधु सेवी हैं वह परलोक में चांडाल के हाथ से मरण को प्राप्त करते हैं।

७०—कुत्ता क्यों होता है?

जो हमेशा ईर्ष्या अभिमान करता है हर एक से बैर विरोध करता है आपस में कलह करता है अप ध्यान करता है बिना प्रयोजन के यत्र तत्र घूमता है अन्य भी ऐसे कार्य करता है वह अगले जन्म में कुत्ता होता है।

७१ बिलाव क्यों होता है?

जो अन्न पान दूध दही की इच्छा से अपने कुटुम्बियों के द्रव्य को चुराता है हमेशा छल कपट करता है अशुभ ध्यान करता है वह परलोक में बिलाव होता है।

७२—सिंह क्यों होता है?

जो हमेशा दूसरों को मारने का विचार करता है अनेक पशुओं को मारता है क्रूर स्वभाव वाला है। हमेशा लोगों का विरोधी है मांस भक्षण में अत्यासक्त है आत्मघाती है अन्य जीवों का घात करता है वह परलोक में सिंह पर्याय प्राप्त करता है।

७३— शृंगाल क्यों होता है ?

जो हमेशा झूठ बोलता है लोगों को ठगता है सबसे ईर्ष्या द्वेष करता है कलह करता है पात्र दान जिन पूजा आदि से हमेशा दूर रहता है वह परलोक में शृंगाल पर्याय प्राप्त करता है।

७४— शील और व्रतों को क्यों भंग करता है ?

जो दूसरों के शील और व्रतों को भंग कराकर संतुष्ट होता है दूसरों की निन्दा करता है चारित्री के चारित्र में दोष लगाता है वह अगले जन्म में व्रत शील को भंग करने वाला होता है।

७५— गाय क्यों होता है ?

जो हीनाचरण वाला है विचार रहीत है अयोग्य भक्षण करता है अन्न पान का अति लोलुपी है मंद बुद्धिमान है वह अगले जन्म में गाय की पर्याय प्राप्त करता है।

७६— भैंस या भैंसा क्यों होता है ?

जो धर्मोपदेश कभी नहीं सुनता है सिर्फ दोष को ग्रहण करने वाला है अशांति पैदा करता रहता है वह परभव में भैंसा या भैंस की पर्याय प्राप्त करता है।

७७— बकरा क्यों होता है ?

जो बिना प्रयोजन के इधर उधर घूमता है बोलता है निवास

करता है विचार हीन होकर निंदनीय कार्य करता है अपनी प्रशंसा और दूसरों की निन्दा करता है वह परलोक में बकरा होता है ।

७८— कौआ की पर्याय कैसे होती है ?

जो अभक्ष मलिन एवं निंदनीय वस्तुओं को खाता है दुख दायक कठोर कड़वे वचन बोलता है वह परलोक में कौआ की पर्याय प्राप्त करता है।

७९— दुष्ट कैसे होता है ?

जो दुष्टों के साथ वाद विवाद करता है व्यसनियों से वाद विवाद करता है साधु सज्जनों के साथ विवाद करता है मिथ्या दृष्टि अति मूर्खों की प्रशंसा करता है वह परलोक में दुष्ट होता है

८०— व्यभिचारो कैसे होता है ?

जो वेश्याओं की संगति करता है व्यभिचारणी स्त्री की संगति करता है दुष्ट लोगों की संगति करता है नपुन्सकों के साथ क्रीड़ा करता है वह परलोक में व्यभिचारी होता है।

८१— पागल क्यों होता है ?

जो किसी मंत्र तंत्र से दूसरों को पागल बनाता है पागलों का अनादर करता है पागलों पर दोष का आरोपण करता है प्रसन्न होता है वह परलोक में पागल होता है।

८२— बंदीगृह में क्यों जाता है ?

जो निर्दोषी को झूठ बोलकर आपति में डालता है शक्ति पूर्वक बंदीगृह में डालता है अन्य क्षेत्र में ले जाकर बंद करता है

वह परलोक में बंदीगृह में पड़ता है।

८३— जन्म लेते ही क्यों मरता है ?

जो अन्य जीवों को जन्म होते ही मार देता है छेदन भेदन करता है किसी का वियोग करता है वह परलोक में जन्म होते ही मरण को प्राप्त होता है।

८४—निंदनीय क्यों होता है ?

जो देव गुरु धर्म की निंदा करता है विधर्मियों पापियों की संगति करता है अन्य का धन खाता है वह अगले जन्म में निन्दा करने योग्य होता है।

८५—अपमृत्यु किससे होती है ?

जो दूसरों को विष देकर संतुष्ट होता है विष से हुई मृत्यु को देखकर संतोष करता है वह परलोक में अकस्मात् अपमृत्यु को प्राप्त करता है।

८६—गृहादि क्यों जलते हैं ?

जो दूसरों के धन आदि को नष्ट करने में लगे रहते हैं अन्य का गृह धन आदि को जलाने में लगे रहते हैं घर धन जलाता है वह परलोक में अपना धन घर आदि जलता हुआ देखता है।

८७—कुटुम्ब के वियोग का कारण क्या है ?

जो पूर्व जन्म में दूसरों से उसके कुटुम्ब का वियोग कराने में प्रयत्नशील रहता है उसकी अनुमति देता है स्वार्थ से दूसरों का अपमान करता है वह परलोक में अपने कुटुम्बियों से वियोग को पाता है।

८८—धन का नाश क्यों होता है ?

जो दूसरों का धन नष्ट करने की चेष्टा करता है राजादि के द्वारा दूसरों का धन नष्ट कराता है पापियों से दूसरों को हानि पहुंचाता है वह परलोक में धनादि के नाश को प्राप्त होता है।

८९—कंठमाला किस कारण से होती है ?

जो दूसरों के कंठ में कष्ट पहुंचाया करता है द्वेष से अन्य को दुख देता है दूसरों की निन्दा करता है कंठ रोगी की खोटी क्रिया करता वह परलोक में कंठमाला के रोग को प्राप्त होता।

९०—ऊंट की पर्याय क्यों मिलती है ?

जो अरहंत देव को नमस्कार नहीं करता है वीतराग निर्ग्रन्थ साधुओं को नमस्कार नहीं करता है भूमि देखकर नहीं चलता है हमेशा स्वच्छन्द प्रवृत्ति करता है धन के मद से पागल सा रहता है वह अगले जन्म में ऊंट की पर्याय पाता है।

९१—हाथी की पर्याय क्यों मिलती है ?

जो व्रतादि नहीं पालता है तपश्चरण नहीं करता है जप नहीं करता है देव धर्म गुरू की सेवा नहीं करता है धार्मिक कार्य नहीं करता है शरीर को पुष्ट करता है वह परलोक में हाथी की पर्याय प्राप्त करता है।

९२—जोंक की पर्याय क्यों प्राप्त करता है ?

जो जीव के सुखदायक गुणों को नहीं ग्रहण करता है दुखों को दूर करने वाले श्रेष्ठ गुणों को ग्रहण नही करता है संसार की अभिवृद्धि करने वाले दोषों को ग्रहण नहीं करता है हमेशा श्रेष्ठ गुण का और श्रेष्ठ गुणवानों का अनादर करता है वह परलोक मे जोंक को पर्याय पाता है।

९३—उल्लू की पर्याय क्यों प्राप्त होती है ?

जो कभी अरहंत का दर्शन नहीं करता है वीतरागी साधुओं के वचनों को नहीं मानता है निर्ग्रन्थ गुरुओं से दूर रहते हैं उनके पास में जाते नहीं हैं वह उल्लू की पर्याय परलोक में पाता है।

९४—डांस मच्छर की पर्याय क्यों पाता है ?

जो वीतराग निर्ग्रन्थ साधुओं के सामने उनकी स्तुति करता है नमस्कार करता है उनके पीछे से निन्दा करता है दूसरों के सामने उनका अनादर करता है वह परलोक में डांस मच्छर की पर्याय प्राप्त करता है।

९५—सर्प की पर्याय प्राप्त क्यों होती है ?

जो धर्म का स्वरूप सुनकर भी गुरु वचन सुनकर भी सम्पूर्ण पदार्थों का स्वरूप जानकर भी अपने वैर विरोध नहीं छोड़ते हैं मिथ्यात्व रूपी विष नहीं छोड़ते हैं वह परलोक में सर्प पर्याय को प्राप्त करता है।

९६—बिच्छू की पर्याय प्राप्त क्यों करता है ?

जो अपने यश के लिए अपने कुटुम्बी अथवा अन्य लोगों के हृदय में कठोर वचनों से ताड़ना करता है दांतों से या नेत्र विकार से काटते हैं वह मरकर परलोक में बिच्छू की पर्याय प्राप्त करता।

९७—चिड़ा को पर्याय क्यों पाता है ?

जो अपना धन इकट्ठा कर ज्ञान वृद्धि नहीं करता है दान पूजा आदि धर्म कार्यों में खर्चता नहीं है अपना पेट भरने में खर्च करता है अपने कुटुम्ब का पालन करने में खर्चता है वह परलोक में चिड़ा पर्याय को प्राप्त करता है।

९८—तोते की पर्याय क्यों मिलती है ?

जो हमेशा ज्ञान धन आदि का अभिमान करता है दूसरों का सुखदायक कार्य करता नहीं है मीठे वचन कहकर अपना काम निकालता है वह परलोक में तोते की पर्याय पाता है।

९९—वृक्ष किस कारण से होता है ?

जो मिथ्याभिमान से भगवान जिनेन्द्र देव को जिन धर्म को जिनवाणी को निर्ग्रन्थ गुरु को नमस्कार वंदना नहीं करता है वह परलोक में वृक्ष होता है।

१००—मयूर की पर्याय किस कारण से पाता है ?

जो अपने आत्मा के अनुभव से शुद्धात्म रस को स्वयं पान नहीं करता है बलपूर्वक दूसरों को पिलाता है अपनी आत्मा के कर्तव्य को छोड़कर परोपकार करने में लगा रहता है वह परलोक में मयूर होता है।

१०१—गिद्ध किस कारण से होता है ?

जो स्वयं धनोपार्जन नहीं करता है कुटुम्बियों के यहां जाकर भोजन करता है जहां भोजन मिला वहां जाकर भोजन करता है वह परलोक में गिद्ध होता है।

१०२—बंदर की पर्याय किस कारण से होती है ?

जो बिना प्रयोजन के देश विदेश भ्रमण में करता है घर-घर में घूमता है अनेक वनस्पतियों को तोड़ता है धर्मायतनों को तोड़-फोड़ करता है वह परलोक में बंदर होता है।

१०३—साधर्मियों से कलह करने का क्या कारण है ?

जो पूर्व जन्म में देव धर्म गुरु का अनादर करता है साधुओं

पर क्रोध करता है वाद विवाद करता है वह परलोक में जन्म लेकर भी कलह करता रहता है।

१०४—राजा भी मरकर रंक क्यों होता है ?

जो धार्मिक कार्य कभी नहीं करता है इन्द्रिय विषयों का सेवन सदा करता है प्रजा से द्वेष करता है पशुओं के समान चलता फिरता है मांस खाता है शराब पीता है वह मरकर परलोक में रंक (दरिद्री) होता है।

१०५—कुदेव कुधर्म कुगुरु की प्रशंसा क्यों करता है ?

जो पूर्व जन्म में कुदेव कुशास्त्र कुगुरु की श्रद्धा करता है विनय करता है भक्ति करता है वह मरकर अगले जन्म में भी कुदेव कुशास्त्र कुगुरु की प्रशंसा करता है।

१०६—गृह गृहणी से रहित होने का क्या कारण है ?

जो मधु मक्खियों के छत्ते तोड़ता है शहद खाता है बया आदि पक्षियों के घोंसले तोड़ता है पक्षियों का मांस खाता है वह परलोक में गृह गुहिणी से वियोग पाता है।

१०७—कीड़ा मकोड़ा किस कारण से होता है ?

जो समितियों का पालन कर छोटे-छोटे जन्तुओं को नहीं बचाते हैं देव शास्त्र गुरु का दर्शन नहीं करता है धन के अहंकार से पागल के समान होकर दीन दरिद्रयों को संतुष्ट नहीं करता है वह परलोक में छोटे-छोटे कीडे मकोड़े होते हैं।

१०८—अशक्त किस कारण से होता है ?

जो अपने स्वार्थ के लिए अपनी शक्ति से भय दिखाकर अन्य जीवों को घातता है बांधकर बन्दीगृह में डालता है वह अगले

जन्म में अशक्त बलहीन होता है।

१०९—अच्छे कार्य करते हुए भी निन्दा क्यों होती है ?

जो सदा काल श्रेष्ठ कार्य करने वालों की, दीन दरिद्रियों की सहायता करने वालों की, समस्त संसार में शांति स्थापित करने वालों की हमेशा निन्दा को प्राप्त करता है।

११०—धर्म कार्य करते हुए धन आदि की हानि क्यों होती है ?

जो दान पूजा जप तप आदि धार्मिक कार्यों को कभी नहीं करता है केवल धन के संचय में ही लगा रहता है वह परलोक में श्रेष्ठ कार्य करता हुआ भी धनादिक की हानि पाता है।

१११—समय-समय पर वर्षा क्यों नहीं होती है ?

जिस क्षेत्र में धार्मिक पुरुष नहीं रहते हैं मुनियों का आवास नहीं होता है देव पूजा नहीं होती है पात्र दान नहीं होता है दुष्टों के आवास है उस क्षेत्र में समय-समय पर वर्षा नहीं होती है।

११२—पुण्यात्माओं के साथ बैर विरोध क्यों होता है ?

जो पूर्व जन्म में बैर विरोधियों की संगति करता है दुष्टों की सेवा करते हैं वह अगले जन्म में पुण्यात्माओं के साथ बैर विरोध करता है।

११३—विपरीत बुद्धि किस कारण से होती है ?

जो पुण्यवान बुद्धिमान लोगों की बुद्धि सुख और शांति देने वाली है, विपरीत बुद्धि सुख शांति में परिणमन कराने में प्रयत्न करता है वह परलोक में सदा ही हानि को प्राप्त करता है अपमान पाता है और विनाश के समय विपरीत बुद्धि को प्राप्त हो जाता है।

११४—अशुभ भावना का फल क्या होता है ?

दुखदायक नरक गति की प्राप्ति नीच तिर्यंचगति की प्राप्ति दरिद्रता की प्राप्ति नीच मनुष्य की प्राप्ति छल कपट से बन्धु वियोग की प्राप्ति आदि अशुभ भावना के फल से प्राप्त करता है।

सत् कर्मफल दीपक

१—सुपुत्रों की प्राप्ति का क्या कारण है ?

जो पूर्व जन्म में कुमार्गगामी अन्य पुत्रों को युक्ति से समझाकर सुमार्ग में लगाता है धर्मात्माओं की सेवा में माता पिता की सेवा में मन लगाता है वह परलोक में श्रेष्ठ पुत्रों वाला होता है।

२—धर्मानुकूल पति क्यों मिलता है ?

जो पूर्व जन्म में देव पूजा पात्रदान आदि धर्म कार्य में लीन रहते हैं उनको देखकर संतुष्ट होती है वह परलोक में दीनों की रक्षाकारी गुणी धर्मानुकूल पति मिलता है।

३—सुपुत्री किस कारण से मिलती है ?

जो दान पूजा आदि धार्मिक कार्यों में संलग्न पुत्रियों को देखकर सतुष्ट होता है सुशीलवान और पठन पाठन कार्य में लीन पुत्रियों को देखकर संतुष्ट होता है वह अगले जन्म में श्रेष्ठ गुणवान पुत्रीयों को प्राप्त करता है।

४—सुपत्नी किस कारण से मिलती है ?

जो पूर्व जन्म में शीलवान स्त्रियों की प्रशंसा करता है सुख देने वाले दान पूजा आदि कार्यों में हमेशा प्रवृत्ति करने वाली स्त्रियों को देखकर संतुष्ट होता है विनयवान स्त्रियों को देखकर प्रसन्न होता है उसे परलोक में श्रेष्ठ सुशील स्त्री की प्राप्ति होती है।

५—यशस्वी क्यों होता है ?

जो तीर्थंकरों के गुणगान करता है धर्मात्माओं का आदर सत्कार करता है वितराग निर्ग्रंथ गुरुओं की सेवा करता है वह परलोक में यशस्वी होता है।

६—सुखद कुटुम्ब किस कारण से मिलता है ?

जो कौटुम्बिक कलह को शांत करता है दुखी कुटुम्ब को धनादिक देकर प्रसन्न होता है सुखी कुटुम्ब को देखकर संतुष्ट होता है वह परभव में सुख देने वाले को कुटुम्ब को प्राप्त करता है।

७—संयमी किस कारण से होता है ?

जो देव गति से आता है माता पिता की सेवा भक्ति करता है मुक्ति दायक धर्मात्माओं की संगति में रहता है वह परलोक में संयम को धारण करने वाला होता है।

८—शोक हीन सुख किस कारण से मिलता है ?

जो पंच कल्याण प्रतिष्ठा को देखकर प्रसन्न होता है देव धर्म गुरु की पूजा भक्ति सेवा को देखकर संतुष्ट होता है जिन धर्म की वृद्धि और धर्मोत्सवों को देखकर संतुष्ट होता है धर्मात्माओं को देखकर संतुष्ट होता है वह अगले जन्म में शोक से रहित सुख को प्राप्त करता है।

९—बहुतों का स्वामी किस कारण से होता है ?

जो देव शास्त्र गुरु की धर्म की सेवा से प्रसन्न होता है धर्मात्माओं का आदर सत्कार करता है विनय करके संतुष्ट होता है धनहीन धर्मात्माओं श्रेष्ठ अन्न वस्त्र धनादिक देकर सुखी होता है वह परलोक में बहुत से जीवों का स्वामी होता है।

१०– निरोग शरीर किस कारण से प्राप्त होता है ?

जो मुनि आर्जिका श्रावक श्राविका के रोगी पात्रों की भक्ति से औषध अन्न आदि देता है निर्मल शुद्ध आसन देता है रोगी साधुओं की सेवा करता है वह परलोक में निरोग शरीर पाता है।

११– नीतिवान और बलवान क्यों होता है।

जो दीन दुखी जीवों की रक्षा करता है असमर्थ लोगों को सुखी करने का प्रयत्न करता है भूखे प्यासे को अन्न जल देता है वह परभव में नीति से पालन करने में बलवान होता है।

१२– समता भाव किस कारण से होता है ?

जो श्रेष्ठ श्रावकों की विनय कर संतुष्ट होता है जिन देव और वीतराग निर्ग्रन्थ साधुओं की शांत मुद्रा देखकर संतुष्ट होता है श्रेष्ठ पुरुषों को देखकर संतुष्ट होता है वह परलोक में समता भावों को प्राप्त होता है।

१३– धर्मात्मा किस कारण से होता है ?

जो धार्मिक कार्यों को देखकर सतुष्ट होते हैं दयालु पुरुषो को देखकर प्रसन्न होता है शील व्रतों का पालने वालों को देखकर संतुष्ट होता है कृपा सागर परम साधुओं को देखकर संतुष्ट होता है वह अगले जन्म में धर्मात्मा होता है।

१४– निर्भय क्यों होता है ?

जो पूर्व जन्म में दुष्ट राजा से या दुष्ट लोगों से सताए हुए दीन दुखियों को अन्न जल अभय आदि देकर रक्षा करता है वह परलोक में निर्भय होता है।

१५– उदार क्यों होता है ?

जो वीतरागी परम साधुओं को आहार दान देता है उनकी अनुमोदना करता है मिथ्यादृष्टि लोगों को मोक्ष मार्ग में लगाता है आहारदान देकर प्रसन्न होता है वह अगले जन्म में उदार होता है

१६– वक्ता कैसे होता है ?

जो पूर्व जन्म में विद्यार्थियों को विद्यादान देता है विद्वानों की सेवा करता है स्वयं को आत्मज्ञान कराने वाले गुरुओं की सेवा व प्रशंसा करता है विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए जिनवाणी का दान करता है वह अगले जन्म में बुद्धिमान वक्ता होता है।

१७– स्वतन्त्र होने का कारण क्या है ?

जो परिवार रहित मनुष्यों को ज्ञान देकर सेवा करता है उन को सुखी बनाने के लिए धन धान्यादि का दान करता है अन्न वस्त्र से रहित लोगों को अन्न वस्त्र देकर हर्ष करता है वह अगले जन्म में सुखी स्वतन्त्र होता है।

१८– सुन्दर शरीर किस कारण से मिलता है ?

जो समस्त संसारी जीवों का शरीर सुन्दर होने की भावना सदाकाल करता है भगवान जिनेन्द्र देव की हमेशा भक्ति किया करता है परम वीतरागी गुरुओं की भक्ति करता है अन्य के निरोग शरीर को देखकर प्रसन्न होता है वह मरकर अगले जन्म में सुन्दर शरीर धारी होता है।

१९– किस कारण से आदर सत्कार मिलता है ?

जो अपनी भक्ति से भगवान जिनेन्द्र देव की सेवा करता है

देव शास्त्र गुरुओं के वचनों को मन वचन काय से प्रमाण मानता है जो समस्त जीवों से प्रेम करता है वह अगले जन्म में श्रेष्ठियों में आदर सत्कार पाता हैं।

२०—ज्ञानी व्रती होने का कारण है ?

जो व्रत उपवास जिन पूजा पात्र दान आदि क्रियाशील लोगों की प्रशंसा करता है व्यसनों में लीन पुरुषों के अनाचार प्रवृत्तियों की निन्दा करता है वह अगले जन्म में ज्ञानी व्रती होता है।

२१—बन्धुओं में प्रेम किस कारण से होता है ?

जो संसार में परमलक्ष्मी प्रद शांति कराता है भाई २ में प्रेम बढाने वाली प्रवृत्ति को बुद्धिगंत करता है भाई बन्धुओं के प्रेम को देखकर प्रसन्न होता है वह परलोक में भाई बन्धुओं के स्नेह की प्रवृत्ति प्राप्त करता है।

२२—वियोगी पुत्र की प्राप्ति किस कारण से होती है ?

जो पुत्र वियोग होने पर उनके माता पिता को धैर्य बंधाता है उनको खोज करने के लिए प्रयत्न करता है हमेशा पुत्र के मिलने की ही बात कहता है वह परलोक में बिछड़े हुए पुत्र को पुनः प्राप्त करता है।

२३—पिता पुत्र में प्रेम का क्या कारण है ?

जो पूर्व जन्म में पिता पुत्र के स्नेह को देखकर प्रसन्न होता है विनय और व्यवहार से प्रसन्न होता है पिता पुत्र के बैर विरोध को मिटाकर शांति स्थापन करता है वह परलोक में पुत्र के स्नेह को प्राप्त होता है।

२४—गर्भ में सुपुत्र होने के क्या लक्षण है ?

जो माता पिता प्रसन्न रहते है। विचार निर्मल होते है दान पूजा आदि शुभ कार्यो में प्रवृत्ति हो जाती है यह लक्षण गर्भ में सुपुत्र आने के हैं।

२५—इच्छानुसार पदार्थों की प्राप्ति किस कारण से होती है ?

जो भव्य जीवों के लिए मुनि अर्जिका श्रावक श्राविकाओं के लिए शुद्ध औषधि अन्न जल देता है समस्त जीवों को सुखी करने की भावना रखता है वह परलोक में इच्छानुसार पदार्थों की प्राप्ति करता है।

२६—देव पर्याय किस कारण से प्राप्त होती हैं ?

जो व्रत उपवास करता है तपश्चरण करता है जप ध्यान करता है भक्ति से देव शास्त्र गुरू की सेवा करता है तीर्थ यात्रा करता है देव पूजा करता है आहार दान देता है वह परलोक में देव पर्याय प्राप्त करता है।

२७—मनुष्य पर्याय किस कारण से प्राप्त होती है ?

जो सदा दान देता है देव पूजा करता है मायाचारी के परिणामों से रहित रहता है क्रोध से भिन्न समता रस का पान सदैव करता है वह परलोक में उत्तम मनुष्य पर्याय को प्राप्त करता है।

२८—भोग भूमियां मनुष्य किस कारण से होता है ?

जी स्वात्मवासी गुरुओं को आहार दान देता हैं भावना करता रहता है प्रशंसा करता रहता है वह परलोक में भोग भूमियां मनुष्य होता हैं।

२९—आर्य खण्ड में जन्म लेने का क्या कारण है ?

जो दुःख देने वाले स्थान में से सुख देने वाले स्थान में लाकर निवास कराता है सुखदायक अन्न जल वस्त्र देकर प्रसन्न होता है वह परलोक में आर्य खण्ड में जन्म लेता है।

३०—अल्पभोजी किस कारण से होता है ?

जो आहार दान देकर प्रसन्न होता है दीन दुखियों को अन्न जल घर वस्त्र आदि देकर प्रसन्न होता है थोड़ा आहार करके प्रसन्न होता है वह अगले जन्म में अल्प भोजी होता है।

३१—व्यवहार चतुर किस कारण से होता है ?

जो विद्या कला आदि में चतुर मनुष्यों को देखकर प्रसन्न होते हैं विवेकी ज्ञानी लोगों की प्रशंसा करता है मुनियों की सेवा करता है वह अगले जन्म में व्यवहार चतुर होता है।

३२—कवि होने का क्या कारण है ?

जो वीतराग सर्वज्ञ देव की कथा कहता है स्तुति करता है चारित्रों का वर्णन करने वाले कवियों का गुणगान करता है प्रशंसा करता है परम्परागत धर्म गुरुओं के गुणों का वर्णन करता है वह अगले जन्म में कवि होता है।

३३—दीर्घायु सुखी किस कारण से होता है ?

जो जीवों को सिंह बाघ आदि से बचाता है बंदीगृह से लोगों को छुड़ाता है रोगी दुखी जीवों को शुद्ध औषधि अन्न आदि देता है वह अगले जन्म में दीर्घायु और सुखी होता है।

३४—अंगोपांग पूर्ण किस कारण से होते हैं ?

जो हमेशा अपनी आत्मा के समान दूसरे पुरुषों के अंग उपांगों की रक्षा करता है दूसरों के अंग उपांगों को पुष्ट करने का प्रयत्न करता है वह अगले जन्म में सम्पूर्ण आंगोपांग वाला होता है।

३५—उच्च गोत्री होने का कारण क्या है ?

जो दूसरों की प्रशंसा करता है अपनी निन्दा करता है दीन हीन लोगों की सेवा करता है समस्त संसार में शांति रखने के लिए प्रिय और सत्य वचन बोलता है वह अगले जन्म में श्रेष्ठ कुल में पैदा होता है।

३६—स्थिर जिविका का क्या कारण है ?

जो दीन हीन पुरुषों को आजीविका में लगाता है अपने अपने स्थान में निवास करने वाले पशु पक्षियों को अन्न जल देकर प्रसन्न होता है वह अगले जन्म में स्थिर आजीविका प्राप्त करता है।

३७—नीच कुलीन धन आदि कैसे मिलते है ?

जो अज्ञानता पूर्वक तपश्चरण करने वाले मिथ्या तपस्वियों को सेवा करता हैं प्रशसा करता है विनय करता है अन्न जल औषध आदि देता हैं वह अगले जन्म में नीच कुलवान होकर भी धन राज्य आदि प्राप्त करता है।

३८—सत्यता के साथ आजीविका का कारण क्या है ?

जो धर्मात्मा पुरुषों को छलकपट छोड़कर आहार जल दान करता हैं प्रशंसा करता हैं दरिद्री होकर भी हीन दीन नहीं होता हैं वह परभव में सत्यता के होने वाली आजीविका प्राप्त करता हैं।

३९—एक साथ बहुत जीव सुखी कैसे होते हैं ?

जो पंच कल्याणक प्रतिष्ठा को देखकर प्रसन्न होता है तीर्थ-यात्रा करके प्रसन्न होता है मुनियों को आहार दान देकर प्रसन्न होता है वह सभी परलोक में एक साथ सुखी होते हैं।

४०– एक साथ बहुत जीव मोक्ष कैसे जाते हैं ?

जो तीर्थंकर परमदेव दीक्षित होते समय उस दीक्षा की प्रशंसा करते हैं स्वात्मानन्द रमण करने वाले परम साधुओं की मिलकर प्रशंसा करते हैं वह सभी एक साथ मोक्ष में जाते हैं।

४१– परस्पर देखकर प्रेम कैसे होता है ?

जो माता पिता भाई बन्धु आदि आपस में मिलकर एक दूसरे का उपकार करता है वह परलोक में अन्योन्य को देखकर प्रेम होता है

४२– दुःख में सहायक कैसे होता है ?

जो पूर्व जन्म में हर एक को वस्त्र देता है औषध देता है अन्न जल देता है कष्ट में मदद करता रक्षा करता है दूसरों की प्रशंसा करता वह अगले जन्म में भी दूसरों के दुख में सहायक होता है।

४३– धनादिक धर्म में किस कारण से लगते हैं ?

जो पूर्व जन्म में धन आदि धर्म कार्य में लगाते हैं धर्म की प्रभावना में अपना द्रव्य खर्चते हैं मोक्ष मार्ग प्रकाश के धर्म शास्त्रों का पठन पाठन में संलग्न रहते हैं वह परलोक में अपना धनादि धर्म कार्यों में लगाते हैं।

४४– श्रुतज्ञानी किस कारण से होते हैं ?

जो भक्ति पूर्वक गुरु की आज्ञा को पालते सेवा करते हैं विनय करते हैं उपचार करते हैं स्तुति करते हैं प्रशंसा करते है शुद्धात्म-

स्वरुप की प्रशंसा करते हैं वह परलोक में श्रुतज्ञानी होते हैं।

४५– शीलवान किस कारण से होते हैं ?

जो पूर्व जन्म में शीलवती स्त्रियों की सेवा करता है उनकी सेवा सुश्रूषा करता है शुद्धात्मा सन्त वीतराग निर्ग्रंथ साधुओं की सेवा करता है अंतरंग वहिरंग लक्ष्मी प्रदायक शुद्धात्म स्वरुप की चर्चा करता है वह परलोक में शीलवान होता है।

४६—सर्वप्रिय क्यों होता है ?

जो धर्मात्मा पुरुषों में अनुराग करता है धर्म में अनुराग करता है भगवान अरहंत देव और वीतराग निर्ग्रंथ गुरुओं की अनुराग पूर्वक भक्ति करता है उत्तमक्षमादि दश धर्म की भावना भाता है धर्मात्माओं की प्रशंसा करता है अपनी निन्दा करता है वह परलोक में सर्वप्रिय होता है।

४७—घर घर में मंगलगान और वाद्य क्यों होते हैं ?

जो भक्ति पूर्वक जिनेन्द्र देव की पूजा करता है रथोत्सव प्रतिष्ठोत्सव आदि उत्सव करता है तीर्थंकर परम देव की स्तुति करता है समस्त जीवों के दुखों को दूर करता है वह अगले जन्म में घर-घर मगलाचार और वाद्य घोष होता है।

४८—मिष्टवाणी कैसे होती है ?

जो सरस्वती देवी की हमेशा सेवा करता हैमीठे मीठे स्वर से गाँ गाँ कर जिनेंद्र देवकी भक्ति करताहै प्रिय बोलने का पूरा प्रयत्न करता है वह अगले जन्म में मिष्ट वाणी बोलने वाला होता है।

४९—संतोष और शांति किस कारण से मिलती है ?

जो निर्ग्रंथ वीतरागी गुरुओं की विशेष वैयावृत्ति करता है जिनवाणी की वैयावृत्ति करता है इन्द्रिय विजयी और मनोनिग्रही की अधिक सेवा करता है देव शास्त्र गुरू की स्तुति करता है वह परलोक में संतोष और शांति के सुख को पाता है

५०—पाप करता हुआ भी धन की वृद्धि कैसे होती है ?

जो पूर्व जन्म में परोपकार करता है मिथ्याव्रत को पालता है मिथ्यातप तपता है वह पापोत्पादक धन की वृद्धि करता है। श्रेष्ठ कार्य करने पर भी शाँति नहीं मिलती है।

५१—देव आदि दास के समान कार्य किस कारण से करते हैं ?

जो समस्त संसारी जीवों के सुखी होने की भावना करता है समस्त जीव जिनेन्द्र देव के भक्त होने की भावना रखता है सभी प्राणी निर्ग्रन्थ वीतराग गुरुओं के भक्त होने की भावना रखता है वह परभव में देवों के द्वारा सेवा को प्राप्त करता है।

५२—व्यय होता हुआ भी धन कैसे बढता है ?

जो निर्ग्रंथ साधुओं को आहार दान देता है औषध दान देता है वसतिका दान देता है शास्त्र दान देता है वह परलोक में धन के व्यय करने पर भी वृद्धि को प्राप्त होता है।

५३—सर्वत्र कीर्ति का कारण क्या है ?

जो पुरुष संसार को बढाने वाले मानापमान को छोड़ता है सभी जीवों के हित प्रयत्नशील रहता है वह परलोक में सर्वत्र कीर्ति को प्राप्त होता है।

५४—मनोज्ञ शरीर किस कारण से प्राप्त होता है ?

जो शुद्धात्मा की चर्चा करता है प्रवृत्ति करता है स्वरूप में अथवा अनन्त सुख में प्रवृत्त होता है परम मुनियों की सेवा में रत रहता है वह परलोक में मनोज शरीर पाता है।

५५— मान्यवर किस कारण से होता है ?

जो पूर्व जन्म में सभी जीवों के हित का प्रयत्न करता है श्रेष्ठ पुरुषों का विनय करता है वैयावृत्ति सेवा करता है यथायोग्य नमस्कार करता है वह अगले जन्म में सर्वोत्तम मान्य पुरुष होता है

५६—पापानुबंधी पुण्य किस कारण से होता है ?

जो मिथ्यात्व कर्म के मंद उदय के साथ पुण्य कर्म करता है वह अगले जन्म में थोडा सा सुख के बाद पुनः दुखद पाप कर्म रुप पापानुबंधी पुण्य को प्राप्त करता है।

५७—पुण्यानुबंधी पुण्य किस कारण से होते हैं ?

जो दर्शन मोहनीय कर्म नाश होने पर पुण्य कार्य करता है परलोक में पुण्यवान बंधी पुण्य को प्राप्त करता है।

५८— परस्पर में शांति किस कारण से होती है ?

जो परम वीतरागी साधुओं के वचनामृत से हमेशा संतोष रखते हैं अपनी आत्मा का हित साधने के लिये ज्ञानवान हैं अन्य लोगों के लिए हमेशा चातुर्य रखते हैं वह सभी आपस में शांति परलोक में प्राप्त करते हैं।

५९— सर्वार्थसिद्धि में जन्म किस कारण से होता है ?

जो हमेशा धर्मानुरागी हैं शुद्धात्म स्वरुप की प्राप्ति को इच्छा करता है शुद्धात्म स्वरुप का अनुभव करते हैं पंच परमेष्ठियों

की वैयावृत्ति करते हैं धर्म ध्यान सुध्यान को ध्याते हैं वह परलोक में सर्वार्थसिद्धि में पैदा होता है।

६०—तीर्थङ्कर किस कारण से होता है ?

जो सम्यक्दृष्टि जीव संसार में से जीवों को उठाकर अपने शुद्धात्म में स्थापन करता है वह परलोक में तीर्थङ्कर पद प्राप्त करता है।

६१—शुभ भावना का फल क्या हैं ?

निरोग शरीर की प्राप्ति सुखद पदार्थों की प्राप्ति होना आदि मान्यता आदि की प्राप्ति स्वर्ग आदि तथा परम्परागत मोक्ष की प्राप्ति होती है।

६२—अनुभूति के स्वामी होने का कारण क्या है ?

जो शुद्धात्म स्वरूप में संतोषकारी साधुओं की प्रशंसा करता है शुद्धात्म स्वरूप की चर्चा करता है स्वात्मा की शुद्धि करता है वह आत्मानुभूति का स्वामी होता है।

६३—मन वचन काय की सरलता का क्या कारण है ?

जो स्वात्मावलोकन करता है जानता है राग द्वेष का क्षय करता महापुरुषों की संगति करता है शुद्धात्मा में रमण करता है वह मन वचन काय की सरलता को प्राप्त करता है।

६४—मनः पर्यय ज्ञान किस कारण से होता है ?

जो धर्म ध्यान का विचार करते है उत्तम तप तपते हैं शुद्धात्मा के ज्ञान रस में लीन रहते हैं रत्नत्रय को ग्रहण करते हैं समता और शांति का उत्तम प्रतिबिम्ब जैसा है वह मनः पर्यय

ज्ञान को प्राप्त करता है ।

६५—केवल ज्ञान किस कारण से होता है ?

जो सम्यक् दृष्टि भव्य मुनि परम पवित्र रत्नत्रय स्वरूप आत्मा में हमेशा लीन होता है शुद्धात्म स्वभाव में रमण होता है समस्त पदार्थों के जानने देखने वाले हैं वह केवल ज्ञान का प्राप्त करता है ।

६६—शुद्धात्मानुरागी किस कारण से होता है ?

मोहनीय कर्म क्षय क्षयोपशम होने पर शुद्धात्मा के संतोषी वीतरागी निर्ग्रंथ साधुओं का श्रद्धान करता है जिन प्रणीत अहिंसा मयी अपने धर्म रुचि रखता है वह चिदानदमय आत्मा के शुद्ध स्वरूप में अनुरागी होता है ।

६७—नैसर्गिक शुद्धात्मा में रमण किस कारण से करता है ?

जो स्वात्मा के स्वरूप का ज्ञाता है दूसरे जीवों के स्वरूप को और पौद्गलिक अन्य समस्त पदार्थों के स्वरूप का ज्ञाता है मन की दयार्द्र रखता है पूर्व जन्म से समाधि और ध्यान का अभ्यासी है वह आत्मा स्वभाव से शुद्धात्मा में रमण करता है।

६८—याचना करने पर भी धनादिक की प्राप्ति क्यों नहीं होती है?

जो जैसा बीज बोता है वैसा फल प्राप्त करता है मांगने से फल की प्राप्ति नहीं होती है ऐसा जानकर श्रेष्ठ कार्य करना चाहिए याचना से इष्ट कार्य की सिद्धि नहीं होती है सुख शांति-प्रद आशायें नष्ट होती है अर्थात वह याचना से भी धनादि की प्राप्ति नहीं होती है ।

६९—शुद्धोपयोग का प्रारम्भ और उसमें लीनता किस गुण स्थान से होती है ?

यह अति शांति स्वरुप मोक्षदायक शुद्धोपयोग का प्रारम्भ स्वात्मानुभुति की उपेक्षा चोथे गुण स्थान से होता है चैतन्य स्वरुप में अनुराग पैदा होता है इसके ऊपर के गुणस्थानों में स्थिरता उत्पन्न हो जाती है इससे आगे के गुण स्थानों में विशेष रुचि हो जाती है प्रमाद के नाश होने पर अर्थात् अप्रमत दशा में आत्म सुख प्राप्त हो जाता है।

७०—शुद्धोपयोग के लिए कौन धर्म ग्रहण करना चाहिए ?

संसार में वीतराग धर्म ही उत्तम धर्म है समस्त जीवों का रक्षक है अनंतचतुष्टयादि एश्वैर्यप्रदायक है सांसारीक विपत्तियों का नाशक है अर्थात् शुद्धोपयोग के लिए इह वीतराग धर्म स्वीकार करना चाहिए। कुदेव का कहा हुआ धर्म सराग धर्म को छोड़ न देवें। जो अशुभोपयोग का कारण है।

७१—शुद्धोपयोगी को बाह्य पदार्थों के त्याग से क्या लाभ होता है?

आत्मा को बाह्य पदार्थों के त्याग से शुद्धोपयोगी कोई भी लाभ नहीं है और बाह्य पदार्थ के न मिलने से काई हानि होती है मान और अपमान से भी कोई लाभ हानि नहीं होती है वह शुद्धोपयोगी स्वर्ग मोक्ष को प्राप्त करता है और उसी को शुद्धोपयोग कहते हैं।

७२—ध्यान ध्याता ध्येय में भेद है या नहीं ?

व्यवहार दृष्टि से भिन्न-भिन्न हैं। लेकिन निश्चय दृष्टि से मेरा शुद्धात्मा स्वयं ध्यान है स्वयं ध्याता है स्वयं ध्येय है इसलिए कोई भेद नहीं है।

७३—ध्यान ध्याता ध्येय का स्वरूप क्या है ?

जो शुद्धात्मा अपने आत्मा में ध्यान करता है वह शुद्धात्मा ध्याता है शुद्धात्मा अपने शुद्धात्मा का ध्येय करता है वह ध्येय है शुद्धात्मा अपने शुद्धात्मा के द्वारा चिंतवन करता है वह ध्यान है।

७४—शुद्धोपयोग की प्राप्ति के लिए कैसी भावना हो ?

जो योगी हमेशा चिदानन्द चैतन्यस्वरूप शुद्धात्मा में ही अपनी बैठक समझता है शुद्धात्मा प्रदेशों गमनागमन का भाव रखता है शुद्धात्मा में शय्या की भावना रखता हुआ सोता है ऐसी भावना शुद्धोय योग धारक की होती है।

७५—शुद्धोपयोगी बचन बोलता है या नहीं ?

परम वीतरागी शुद्धोपयोगी शुद्धात्माए प्रायः मौन धारक होते हैं अपने आत्मा में शान्ति लाने के लिए कभी हितमित प्रिय परम शांति प्रदायक वचन कहते हैं यह आत्मा रत्नत्रय मयी है व्यवहार से सिद्ध करने योग्य है यह प्रसिद्ध है परमार्थ से शुद्ध चैतन्य स्वरूप आदि मध्य और अंत रहित है ऐसा बोलते हैं।

७६—संसार में वास्तविक विजयी कौन है ?

सिंह व्याघ्र आदि को वश करने वालों में, प्रबल शत्रुओं को जीतने वालों में, उत्तमोत्तम इन्द्रिय विषयों को प्राप्ति करने वालों में, हाथी आदि परीक्षकों में, मणि आदि के परीक्षकों में, कर्मों को वश करने वाले, आत्म सुख की प्राप्ति करने वाले, शुद्धात्मा के परीक्षक, शुद्धोपयोगी कृतकृत्यो जीव ही वास्तविक विजयी हैं।

७७—आत्मा का आधार क्या है ?

जीव के साथ कर्मों का सम्बन्ध होने से संसारी आत्मा का आधार शरीर है शरीर का विशिष्ट आत्मा का आधार पृथ्वी है पालन पोषण की अपेक्षा से शरीर विशिष्ट आत्मा का आधार भाई बन्धु भी है वास्तव में तो कर्मबन्ध से रहित शुद्धात्मा का आधार अपना शुद्धात्मा है और यही आधय है यह योगीगम्य है।

७८—शुद्ध भावना का फल क्या है ?

इस शुद्ध भावना के फल से मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ति होती है अनन्त सुख का स्थान शुद्ध स्वरूप में आचरण होता है शुद्ध चैतन्य आत्म स्वरूप में तृप्ति होती है।

***

मूक्तक

कटु वचन स्वर्ग को भी नर्क बना देते हैं,
यह जीवन की खुशियों में आग लगा देते हैं।
अतीत गवाह है इस बात का लोगो,
कटु वचन भाइयों में 'महाभारत' मचा देते हैं॥

□ □ □

स्वयं जलकर जो दे दूसरे को प्रकाश उसे प्रभाकर कहते हैं,
हर कर सारा विष जो दे जीवन दान उसे सुधाकर कहते हैं।
धार संयम जो चल पड़े जग में पाप अन्धकार मिटाने को,
लोग उसे ही शिश नवा श्रद्धा से जैन दिवाकर कहते हैं॥

अनमोल वचन

[१] गुरु विहीन समाज अनाथ है ।

[२] चाम से नहीं काम से चमको ।

[३] गृहस्थों के पापों से तिरने का संबल गुरु भक्ति है ।

[४] जिन पूजा और दान गृहस्थ का परम धर्म है ।

[५] दान विहीन घर सूना है ।

[६] महल की भव्यता उसकी रचना नहीं, उसमें होने वाले सत्कार्य है ।

[७] अभिमान से दुर्गति मिलती है ।

[८] सदगुरु भक्ति से मुक्ति मिलती है ।

[९] निर्ग्रन्थ गुरु ही सद्गुरु है ।

[१०] सरलता जीवन का वरदान है ।

[११] निर्ग्रन्थ गुरु भक्ति भव सागर को नाव है ।

[१२] मानव शरीर उन्नत आचरण से ही सर्वोत्तम कहा जाता है ।

[१३] विवेक की आंख पतन से बचाती है ।